# हस्तक्षेप

कोरोना के खिलाफ विश्व युद्ध

www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

hastkshep.rsahara@gmail.com

नई दिल्ली। शनिवार ● 21 मार्च ● 2020




## कोरोना को हराना है

**पूरा विश्व इस समय संकट के बहुत बड़े गंभीर दौर से गुजर रहा है। जब प्रथम विश्व युद्ध हुआ था, जब द्वितीय विश्व युद्ध हुआ था, तब भी इतने देश युद्ध से प्रभावित नहीं हुए थे, जितने आज कोरोना से हैं।**

1. प्रत्येक भारतवासी सजग रहे, सतर्क रहे, आने वाले कुछ सप्ताह तक, जब बहुत जरूरी न हो अपने घर से बाहर न निकले
2. 60 से 65 वर्ष की आयु के ऊपर के व्यक्ति घर के भीतर ही रहें
3. इस रविवार यानी 22 मार्च को, सुबह 7 बजे से रात 9 बजे तक, जनता-कर्फ्यू का पालन करें
4. दूसरों की सेवा कर रहे लोगों का 22 मार्च की शाम को 5 बजे 5 मिनट तक करतल ध्वनि के साथ आभार व्यक्त करें
5. रूटीन चेक-अप के लिए अस्पताल जाने से बचें, जो सर्जरी बहुत आवश्यक न हो, उसकी तारीख आगे बढ़वाएं
6. वित्त मंत्री के नेतृत्व में गठित केविड-19 आर्थिक प्रतिक्रिया कार्य बल से आवश्यक फैसले लेने का आग्रह
7. व्यापारी जगत से, उच्च आय वर्ग से, दूसरों का वेतन न काटने का आग्रह
8. देशवासियों से सामान संग्रह न करने, खौफ में आकर खरीदारी न करने का आग्रह
9. आशंकाओं और अफवाहों से बचने का आग्रह
10. लोगों को जागरूक करें-हर व्यक्ति कम-से-कम दिनभर में 10 लोगों को फोन करके कोरोना वायरस के बारे में जागरूक करे। लोगों को जनता कर्फ्यू के बारे में बताएं। यह कर्फ्यू हमारे लिए ही है।

■

# मोदी के 'अनुशासन मंत्र' से लड़ाई होगी आसान

**दुनिया के करीब १८० देशों में कोरोना वायरस दस्तक दे चुका है और इनमें से करीब २० देशों में यह महामारी का रूप ले चुका है। कोरोना ऐसी पहली महामारी है जिसकी गिरफ्त में पूरी दुनिया है। इसीलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने समूची मानवता के लिए एक गंभीर संकट मानते हुए इस दौर को पहले और दूसरे विश्व युद्ध से भी ज्यादा खतरनाक बताया है। खुशी की बात है कि भारत में यह बीमारी अभी महामारी का रूप नहीं ले सकी है लेकिन इसके विस्तार की प्रबल आशंका बनी हुई है। अगर जरूरी एहतियात नहीं बरती गई तो भारत में भी इसे महामारी बनने से नहीं रोका जा सकेगा। कोरोना वायरस के विस्तार की रफ्तार का अध्ययन करने के बाद वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी की है कि दुनिया की बड़ी आबादी तक यह वायरस पहुंचेगा। लेकिन करीब ८० से ९० फीसद लोग मामूली सर्दी, जुकाम और बुखार की दवा लेकर ठीक हो जाएंगे। सिर्फ १० से १५ फीसद पर ही इसका गंभीर असर होगा और इनमें भी ३ से ४ फीसद लोंगों की ही मौत होगी जबकि दूसरी महामारियों में मृत्यु दर १० से लेकर ३० फीसद तक रही है। वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि कोरोना वायरस के विस्तार के लिहाज से आने वाले ४-५ सप्ताह बेहद चुनौतीपूर्ण हैं। कोरोना से सिर्फमानव जीवन को ही खतरा नहीं, बल्कि विश्व व्यापार, बाजार, तकरीबन सारे उद्योग और समूची विश्व अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो चुकी है। पहले से ही मंदी की मार झेल रहे देशों की कमर टूटनी तय है। दुनिया के शेयर बाजार धराशायी हो चुके हैं। ऐसे में जो बीमारी से बच भी गए तो उन्हें लंबे समय तक इस आर्थिक संकट की मार सहनी पड़ेगी। संकट चौतरफा है, इसलिए इस बार का *हस्तक्षेप* कोरोना के खिलाफ इसी विश्व युद्ध पर:**



■ उपेन्द्र राय

मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं एडिटर इन चीफ, सहारा न्यूज नेटवर्क

पिछले तीन महीनों में कोरोना का वायरस एक तूफान की तरह लगातार आगे बढ़ता गया है। यह तूफान जहां-जहां से गुजरा है, वहां-वहां खौफ का मंजर दिखाई दे रहा है। अब तक दुनिया के 180 से ज्यादा देशों में करीब ढाई लाख लोग इसके संक्रमण से जूझ रहे हैं और दस हजार से ज्यादा लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। इसने चीन से निकल कर यूरोप को अपना एपीसेंटर बना लिया है, जहां इटली में अब मौत का आंकड़ा चीन से भी ज्यादा हो गया है और शवों को दफनाने के लिए कब्रिस्तान कम पड़ने लगे हैं। बुधवार को इटली में 475 लोग और गुरुवार को 427 लोग इसके शिकार बन गए। कोरोना वायरस भारत में भी पांच जिंदगियां लील चुका है और संक्रमित लोगों का आंकड़ा दोहरे शतक को पार कर गया है।

लगातार बढ़ रहा मौत का आंकड़ा खौफ को बढ़ा रहा है और दुनिया की बेबसी को भी बयां कर रहा है। कोरोना का पहला मामला सामने आए हुए करीब-करीब 100 दिन बीत चुके हैं। लेकिन हम बस इतना पता लगा पाए हैं कि यह वायरस इंसानी शरीर पर किस तरह वार कर रहा है। इसका पलटवार यानी इलाज क्या है, इस पर अभी तक तो पूरी दुनिया खाली हाथ है। चीन, अमेरिका, इजराइल, जापान जैसे कई देश कोरोना का 'तोड़' ढूंढ लेने का दावा तो कर रहे हैं, लेकिन कोई भी यकीनी तौर पर अपनी 'कामयाबी' पर एतबार नहीं कर पा रहा है।

> विशाल आकार और आबादी के घनत्व के कारण आशंका जताई जा रही है कि भारत कोरोना का अगला सबसे प्रमुख केंद्र बन सकता है। भारत में हर वर्ग किमी. में औसतन 420 लोग रहते हैं। चीन में यह आंकड़ा 148 पर ठहर जाता है यानी आबादी का घनत्व चीन से करीब तीन गुना है

चीन दावा कर रहा है कि वो ऐसी दवा पर काम कर रहा है जिससे हल्के मामलों को गंभीर बनने से पहले ही ठीक कर लिया जाए। अमेरिका मलेरिया की दवा में कोरोना का इलाज ढूंढ रहा है तो लंदन के वैज्ञानिक सार्स की दवा आजमा रहे हैं। भारत में जयपुर में एचआईवी के टीके से तीन मरीजों के ठीक होने की खबर सामने आई है, तो ऑस्ट्रेलिया ने अपने टीके को 'ब्रह्मास्त्र' बनाने के लिए एचआईवी की दवा में मलेरिया का भी कॉम्बिनेशन कर दिया है। चीन और इटली के बाद सबसे ज्यादा परेशान ईरान भी जर्मनी की तरह कोरोना से फेफड़ों को बचाने के मिशन पर काम कर रहा है और इजराइल वायरस की जैविक संरचना का पता लगा कर खुद को दवा बनाने के बेहद करीब बता रहा है। दवा बनाने के लिए यूके की सरकार ने 440 करोड़ रुपये का फंड भी जारी कर दिया है। यूरोपियन देशों की ही 35 से ज्यादा कंपनियां कोरोना की काट ढूंढने में लगी हैं। इस सबसे इतना तो समझ में आ रहा है कि दवा ढूंढ लेने की दावेदारी को भले ही अंधेरे में तीर चलाने जैसी जुमलेबाजी से खारिज न किया जा सकता हो, लेकिन इसकी तुलना तीरंदाजी की किसी ऐसी विश्वसनीय प्रतियोगिता से भी नहीं की जा सकती जिसका लक्ष्य स्पष्ट होता है और दावेदार में से किसी-न-किसी का विजेता बनना भी तय होता है।

इसलिए फिलहाल तो समझदारी किसी जुमले के बजाय मेडिकल साइंस के आजमाए फॉर्मूले 'प्रिवेंशन इज बेटर दैन क्योर' पर चलने में ही दिखती है जिसके लिए हद से ज्यादा हाईजीन बनाए रखने की जरूरत है। हम जितना ज्यादा सफाई में रहेंगे, जितना खुद को आइसोलेट करेंगे, उतना ही कोरोना से बचे रहेंगे।



इलस्ट्रेशन - जे.पी. त्रिपाठी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी देश को हर तरह की एहतियात बरतने की नसीहत दी है। रविवार को एक दिन सुबह से रात तक देश की जनता से खुद को कर्फ्यू में रखने की उनकी अपील को लॉकडाउन की घबराहट के तौर पर नहीं, बल्कि खतरे की आहट के बीच देशवासियों को सुरक्षित रखने के लिए संसाधनों की बेहतर जमावट के नजरिए से देखा जाना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी की इस अपील से साफ है कि 21वीं सदी के तीसरे दशक का 12वां रविवार आने वाले समय में जनता कर्फ्यू के लिए याद किया जाएगा। जनता की ओर से, जनता के लिए, जनता का कर्फ्यू पीएम मोदी ने इसे इसी रूप में परिभाषित किया है। कारण यह है कि लोकतंत्र की परिभाषा में शामिल जनता पहली बार चिकित्सकीय सुरक्षा के किसी आंदोलन में शामिल हुई है। कोरोना के खिलाफ दुनिया भर में जारी जंग में भारत पहला ऐसा देश बन गया है जिसने एक साथ एक समय पर खुद को क्वॉरंटाइन करते हुए मुहिम से जुड़े लोगों के लिए तालियां बजाकर सम्मान देने का निर्णय लिया है।

अपनी अपील में प्रधानमंत्री मोदी ने कोरोना के दूसरे चरण में प्रवेश कर चुके देश को याद दिलाया है कि किस तरह चीन और पाकिस्तान से युद्ध के दौरान देशवासियों ने संकल्प और संयम की मिसाल पेश करते हुए ब्लैकआउट की चुनौती को पार किया था। वक्त उस चुनौती का गवाह बने लोगों का नये सिरे से इम्तिहान ले रहा है क्योंकि वही पीढ़ी आज उम्र के उस दौर में है जहां कोरोना से सबसे ज्यादा खतरा है।

प्रधानमंत्री की नसीहत एक और संदर्भ में बेहद अहम है। दरअसल, विशाल आकार और आबादी के घनत्व के कारण ऐसी आशंका जताई जा रही है कि भारत कोरोना का अगला सबसे प्रमुख केंद्र बन सकता है। भारत में हर वर्ग किलोमीटर में औसतन 420 लोग रहते हैं। चीन में यह आंकड़ा 148 पर ठहर जाता है यानी हमारी आबादी का घनत्व चीन से करीब तीन गुना है। इसका एक बड़ा हिस्सा उन तंग बस्तियों में रहता है, जहां पांच से लेकर आठ लोगों तक का एक छोटे-से कमरे में रहना सामान्य बात है। यहां साफ-सफाई के संसाधनों और पानी की कमी भी असामान्य बात नहीं है। लंबे समय में यह किल्लत यहां रहने वालों में स्वच्छता को लेकर असंवेदनशीलता की आदत में बदल जाती है। ऐसी हालत में अगर हम संक्रमण के तीसरे चरण में पहुंच गए तो बीमारी का सामुदायिक प्रसार होगा, मरीजों को आइसोलेट करना मुश्किल हो जाएगा और हालात बेकाबू हो जाएंगे। इसलिए हम अभी नहीं संभले तो कोरोना का असर चीन से तीन गुना तक जा सकता है।

केवल घनत्व ही नहीं, हमारी आबादी की जमावट और साफ-सफाई की आदत पर भी ध्यान देने की जरूरत है। देश की दो-तिहाई आबादी गांव में रहती है यानी हर तीन में से दो व्यक्ति गांव में रहते हैं। कई रिपोर्ट्स से हमें यह भी पता चलता है कि इस ग्रामीण आबादी का एक-चौथाई हिस्सा स्वच्छता और बीमारियों को लेकर लापरवाही बरतता है। बेशक, इसकी वजह गरीबी और अज्ञानता भी है, लेकिन मौजूदा दौर में बीमारी के लक्षण छिपाना, हाथों को नियमित साफ नहीं करना, बिना हाथ धोए बच्चों को खाना खिला देना जैसी लापरवाहियां केवल एक शख्स को नहीं, बल्कि उसके परिवार और संपर्क में आने वाली बड़ी आबादी को भी मुश्किल में डाल सकता है। इसमें रोज कमाकर खाने वालों की घर से बाहर निकलने की मजबूरी को भी जोड़ लें तो तीसरा चरण हमारे लिए दुनिया के किसी भी दूसरे देश से ज्यादा भयावह साबित हो सकता है।

हालांकि खतरे की इस आहट के बीच एक बड़ी राहत भी है। कोरोना से करीब-करीब चार महीने की जंग लड़ने के बाद चीन अब इसे रोकने में कामयाब होता दिख रहा है। बीते दो-तीन दिनों में चीन में कोरोना संक्रमण के मामले में व्यापक कमी आई है। कहने की जरूरत नहीं है कि चीन को यह जीत उसके हार नहीं मानने के असाधारण संकल्प और सामान्य संयम से आगे जाकर हद से ज्यादा राष्ट्रीय अनुशासन के दम पर ही मिली है। कोरोना को हराने का हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मंत्र भी तो यही है।

■

## भारत में कोरोना के मामले

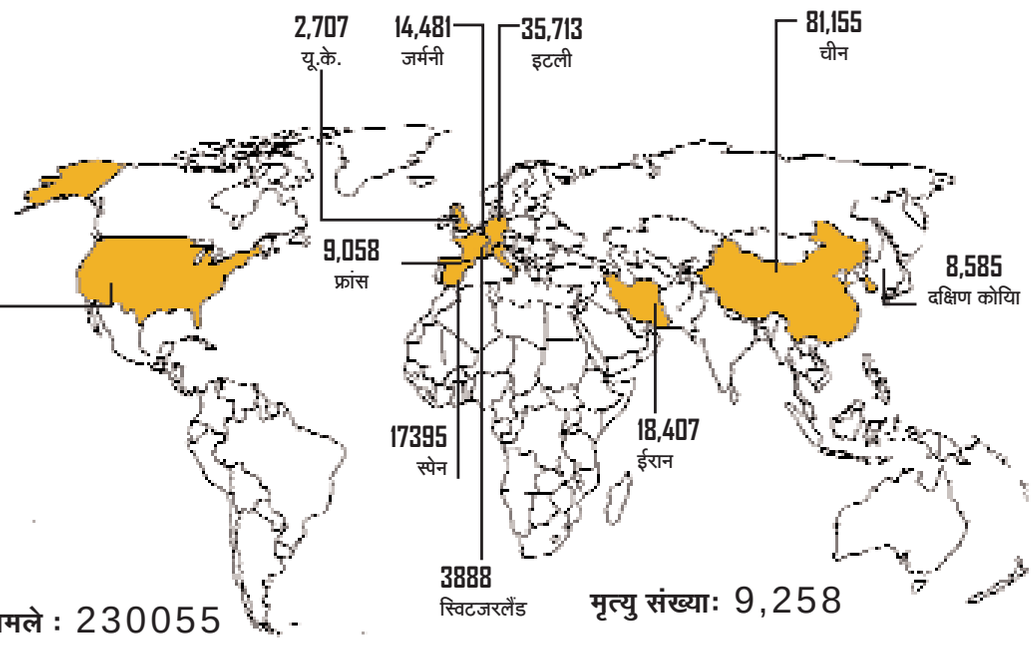
| राज्य/कें. शा. प्रदेश | कुल मामले (भारतीय नागरिक) | कुल मामले देशी नागरिक | उपचारित |
|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | 2 | 0 | 0 |
| छत्तीसगढ़ | 1 | 0 | 0 |
| दिल्ली | 16 | 1 | 3 |
| गुजरात | 2 | 0 | 0 |
| हरियाणा | 3 | 14 | 0 |
| कर्नाटक | 15 | 0 | 0 |
| केरल | 26 | 2 | 3 |
| महाराष्ट्र | 44 | 3 | 0 |
| ओडिशा | 1 | 0 | 0 |
| पुडुचेरी | 1 | 0 | 0 |
| पंजाब | 2 | 0 | 0 |
| राजस्थान | 5 | 2 | 3 |
| तमिलनाडु | 3 | 0 | 1 |
| तेलंगाना | 7 | 9 | 1 |
| चंडीगढ़ | 1 | 0 | 0 |
| जम्मू और कश्मीर | 4 | 0 | 0 |
| लद्दाख | 10 | 0 | 0 |
| उत्तर प्रदेश | 18 | 1 | 9 |
| उत्तराखंड | 1 | 0 | 0 |
| पश्चिम बंगाल | 1 | 0 | 0 |
| भारत में कुल पुष्टि मामलों की संख्या | 163 | 32 | 20 |

भारत में अब तक पांच मरीजों की मौत हुई है। ये मौतें कर्नाटक, दिल्ली, पंजाब, महाराष्ट्र और राजस्थान में हुई।

*स्रोत : परिवार एवं कल्याण मंत्रालय*

*आंकड़े 20 मार्च सुबह नौ बजे तक के*

## विश्व में कोरोना के मामले




## मौत का खतरा महज दो से तीन फीसद

**अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के निदेशक एवं डिपार्टमेंट ऑफ पल्मोनरी एंड रेस्पिरेटरी के प्रमुख *डॉ. रणदीप गुलेरिया* से कोरोना वायरस (कोविड-19) के मामले में तैयारियों और भ्रांतियों पर ज्ञान प्रकाश की बातचीत के प्रमुख अंश :**



**प्र: हालात कितने नियंत्रण में हैं?**

उ. चीन से मानव से फैले कोविड-19 कोरोना वायरस की रफ्तार यूरोपियाई देशों की अपेक्षा भारत में नियंत्रण में है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सघन निगरानी में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय हर वह कदम उठा रहा है, और सामान्यतः अंतरराष्ट्रीय मंच पर विख्यात विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) जैसे संगठन के नित नये रोकथाम के लिए जारी किए जा रहे दिशानिर्देशों का अनुपालन कर रहा है। कहना चाहता हूं कि सघन निगरानी, जांच, सावधानी के कदम निरंतर हर देशावासी को करना जरूरी है। कोरोना वायरस से डरने की जरूरत नहीं है। इस वायरस के संक्रमण से मौत का खतरा महज दो से तीन फीसद ही है।

**प्र: स्वास्थ्य क्षेत्र कितना तैयार है?**

उ: कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है। कोविड-19 नामक यह वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। आकार में इस छोटे वायरस ने पूरी दुनिया को डरा दिया है। भारतीय चिकित्सा क्षेत्र की बात की जाए तो विशेषज्ञों को इस वायरस के सक्रिय होने के यदि चार दिन के अंदर पता लग जाए तो असरदार इलाज संभव है। इस वायरस को फैलने से रोकना फिलहाल सबसे बड़ी चुनौती है। मास्क, सेनेटाइजर, सघन स्क्रीनिंग को वर्तमान में तैयारियों की श्रेणी रखा जा सकता है।

**प्र: वैक्सिन पर कितना काम हुआ है?**

उ: नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरालॉजी, पुणे और आईसीएमआर के वैज्ञानिक इस वायरस को निष्क्रिय करने के लिए टीके की खोज के अंतिम चरण में हैं। वायरस के एंटीबॉडीज सेल्स की प्रवृत्ति पर वैज्ञानिक फोकस कर रहे हैं। इसमें कम से कम मानव पर क्लीनिकल परीक्षण की स्थिति में आने में दो साल तक का वक्त लगने की संभावना है।

**प्र: क्या-क्या व्यावहारिक सतर्कता बरतनी चाहिए?**

उ: स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक, हाथों को साबुन से धोना चाहिए। अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खांसते और छींकते समय नाक और मुंह को रूमाल या टिश्यू पेपर से ढककर रखें। जिन व्यक्तियों में कोल्ड-फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें। अंडे और मांस के सेवन और जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें। इसके लक्षण फ्लू से मिलते-जुलते हैं। संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना, गले में खराश जैसी समस्या उत्पन्न होती हैं। वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। कुछ मामलों में कोरोना वायरस घातक हो सकता है। खास तौर पर अधिक उम्र के लोग और जिन्हें पहले से अस्थमा, मधुमेह और दिल की बीमारी है।

**प्र: सामान्य उपचार क्या हो सकता है?**

उ: दुनिया भर की सरकारें कोरोना वायरस को लेकर लोगों को जागरूक करने पर ध्यान दे रही हैं। इसका संक्रमण फैलने से रोक कर ही इसे काबू में किया जा सकता है। इसके लक्षणों को पहचान कर ही कोरोना वायरस की बेहतर तरीके से रोकथाम की जा सकती है।

**प्र: पैनिक रोकने के लिए संदेश?**

उ: यह संक्रमित व्यक्तियों की छींक और खांसी से निकलने वाले ड्रॉपलेट्स से ही फैलता है। जितने मामले सामने आए हैं उनमें लगभग 80 फीसद मरीज हल्की बीमारी का शिकार हुए हैं और सामान्य ओवर द काउंटर यानी ओटीसी दवाओं से ठीक हो गए हैं। मरीज की रोग प्रतिरोधक क्षमता ही कोरोना वायरस को खत्म करती है। हालांकि, चिंता केवल उन मरीजों को लेकर है जो उम्रदराज हैं और जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम है। ऐसे मरीजों को आईसीयू में ही रखना पड़ता है। इस वायरस के संक्रमण का खतरा संक्रमित व्यक्ति के नजदीक यानी दो से तीन मीटर के करीब आने पर ही होता है। ■


**पेज 2** प्रो. आर. बी. सिंह। डॉ. आरपी पाराशर/डॉ. आदित्य कौशिक। देवव्रत शर्मा

**पेज 3** प्रो. राम सिंह। सुभाष सिंह सुमन। अभिषेक प्रताप सिंह

**पेज 4** डॉ. बलराम भार्गव। डॉ. सुधीर भंडारी। डॉ. वेद प्रकाश। डॉ. के. के. अग्रवाल


MAGAZINE KING

# शहरों पर पड़ सकता है ज्यादा असर



■ प्रो. आर. बी. सिंह
सेक्रेटरी जनरल, इंटरनेशनल ज्योग्राफिकल यूनियन

**मौजूदा** वैश्विक महामारी कोरोना वायरस कोविड-19 के पहले मामले की आधिकारिक पुष्टि 31 दिसम्बर, 2019 को चीन के हुबेई प्रांत के बुहान शहर में हुई थी। उसके बाद यह वायरस तेजी से फैला। देखते-देखते इसने चीन के अन्य शहरों को अपनी जद में लेते हुए पूरी दुनिया को चपेट में ले लिया। यूं ही नहीं है कि यह वायरस एक शहर से पैदा हुआ है। पीटर दास्जाक बताते हैं, 'हमने प्राकृतिक पर्यावरणीय पारिस्थितिकीय प्रणाली में दखलंदाजी से वायरस तैयार किया था'। 'वायरस को उनके कुदरती प्रश्रय (मेजबानों) से हटाया' और चाहा कि वे नये प्रश्रय से तालमेल बिठा लें और फिर इन्हें इंसानों तक पहुंचाया या उनमें डाल दिया। जैसा कि कोविड-19 महामारी से स्पष्ट है, शहरी स्वास्थ्य जोखिम तेजी से फैलते हैं, यकायक वैश्विक स्वास्थ्य आपदकाल बन सकते हैं। इस महामारी से अब तक दो लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हो चुके हैं। सात हजार से ज्यादा लोगों की मृत्यु हो गई है। अभी भी संक्रमित होने वालों और मरने वालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ने पर है। कोविड-19 मानव स्वास्थ्य, उत्पादन, जीवन, सामाजिक आचार-व्यवहार और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर गंभीर असर डाल रहा है।

### भौगोलिक निगरानी

कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में ज्योग्राफिकल इंफॉरमेशन सिस्टम्स (जीआईएस) तथा बिग डाटा तकनीकों ने अनेक तरीकों से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 23 जनवरी को चीन की सरकार ने निर्णायक फैसला करते हुए वुहान शहर को सील कर दिया। हुबेई प्रांत में सभी शहरों तक पहुंचने वाले बाहरी रास्तों को बंद कर दिया। प्रत्येक प्रांत ने प्राथमिक स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित किया जिससे संक्रमण को शुरुआत में तो फैलने से काफी हद तक रोक दिया गया था। चीन ने काफी इंसानी और सामाजिक-आर्थिक नुकसान उठाने के बाद स्वयं और शेष विश्व को बचाने और संक्रमण पर नियंत्रण के लिए समय नहीं गंवाया। तीन फरवरी को, निर्माण किए जाने के मात्र दस दिन बाद ही, हुशेनहान अस्पताल, वुहान में एक हजार बिस्तरों का अस्पताल, शुरू कर दिया। आठ फरवरी को लीहेनशन अस्पताल, जो 1600 बिस्तरों का अस्पताल है, का निर्माण कार्य पूरा करके जनता के लिए खोल दिया गया। इस बीच देश भर से चिकित्सकीय स्टाफ को संक्रमण से पार पाने के लिए हुबेई प्रांत भेज दिया गया।

बारह फरवरी को स्थानीय सरकार ने वे उपाय करने शुरू कर दिए जिनसे संक्रमण को महामारी में तब्दील होने से रोका जा सके। नतीजा हुआ कि संक्रमण के नये मामले आने का सिलसिला कम होने लगा। इस दौरान चिकित्साकर्मियों ने जीआईएस और बिग डाटा तकनीक का इस्तेमाल किया। यह बेहद वैज्ञानिक और तकनीकी मदद है जो सरकार को मिलती है। इससे संक्रमण की स्थिति का आकलन करने में सुविधा होती है। तद्नुरूप बचाव व कारगर नियंत्रण उपाय संभव हो पाते हैं।

आज मुख्य चुनौती यह है कि उन रणनीतियों का पता लगाया जाए जिनसे पारंपरिक तकनीकी तरीकों के साथ तालमेल बिठाया जा सके। त्वरित सामाजिक प्रबंधन के लिए सटीक जानकारी तत्काल हासिल हो सके। इसके अलावा, बिग डाटा के इस दौर में, डाटा अब सरकार की तरफ से मुहैया नहीं कराया जाता, बल्कि विभिन्न उद्यमों से जुटाया जाता है। फलस्वरूप, जीआईएस को डाटा एकत्रीकरण में समस्या आती है। विभिन्न डाटा से निष्कर्ष तक पहुंचने में दिक्कत आती है। जरूरी है कि सरकारें, कारोबारी उद्यम और अकादमिक साथ मिलकर संबद्ध नीतियां तैयार करें। तकनीक के स्तर पर बिग डाटा के लिए भौगोलिक विश्लेषण तरीकों का इस्तेमाल बढ़ रहा है। अभी और आने वाले समय में जीआईएस के विकास को मजबूत करना होगा ताकि त्वरित जानकारी हासिल करने के लिए डाटा-आधारित प्रणाली तैयार की जा सके।

**उम्मीद है कि 2050 तक यह बढ़कर 68 प्रतिशत हो जाएगी। शहरों में आबादी का घनत्व भी सर्वाधिक होता है। इतिहास उठाकर देख लें। शहरों में ही संक्रामक रोग फैलने के सर्वाधिक मामले प्रकाश में आते रहे हैं। लेकिन शहर ही हैं, विशेषकर विकसित देशों में, जहां ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में औसत आयु ज्यादा होती है। दरअसल, शहरों में साफ-सफाई का अच्छे से ध्यान रखा जाए तो कोई महामारी फैलने की आशंका ज्यादा नहीं होती। यदि फैलती है तो सर्वाधिक प्रभावित भी शहरी आबादी ही होती है**

### तेजी से फैला कोविड-19

कोविड-19 का तत्काल पता नहीं लग पाता। यही कारण है कि यह तेजी से फैला और महामारी का रूप ले लिया। ऐसी स्थिति में जरूरी है कि जीआईएस और बिग डाटा तकनीक से विश्लेषण किए जाएं और संक्रमण संबंधी जानकारी तेजी से मुहैया हों ताकि समय रहते मदद पहुंचाई जा सके। जीआईएस ने इस संक्रमण के भौगोलिक रुझानों, चिकित्सा सामग्री की मात्रा, जनसंख्या और सामाजिक मनोविज्ञान का तीन स्तरों पर विश्लेषण किया। व्यक्तिगत स्तर पर भौगोलिक रूप से संक्रमण के फैलाव को जाना और मरीजों की जानकारी ली गई। समूह के स्तर पर जनसंख्या के प्रवाह का अनुमान लगाकर भौगोलिक फैलाव को जाना गया। क्षेत्रीय स्तर पर भौगोलिक जोखिम, चिकित्सकीय संसाधनों की आपूर्ति और मांग के बीच संतुलन का विश्लेषण तथा भौगोलिक अंतर की दृष्टि से चिकित्सकीय परिवहन की क्षमता का विश्लेषण तथा सामाजिक धारणाओं को जाना गया।

2018 में विश्व की 55 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्रों में आबाद थी। उम्मीद है कि 2050 तक यह बढ़कर 68 प्रतिशत हो जाएगी। शहरों में आबादी का घनत्व भी सर्वाधिक होता है। इतिहास उठाकर देख लें। शहरों में ही संक्रामक रोग फैलने के सर्वाधिक मामले प्रकाश में आते रहे हैं। लेकिन शहर ही हैं, विशेषकर विकसित देशों में, जहां ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में औसत आयु ज्यादा होती है। दरअसल, शहरों में साफ-सफाई का अच्छे से ध्यान रखा जाए तो कोई महामारी फैलने की आशंका ज्यादा नहीं होती। यदि फैलती है तो सर्वाधिक प्रभावित भी शहरी आबादी ही होती है। कोविड-19 ने इस डर को पुष्ट कर दिया है कि शहरों पर यह संक्रमण कहर बनकर टूटेगा। शहरों में जो संक्रामक रोग फैलते रहे हैं, उनके लिए कोई न कोई कारगर दवा हमारे पास रही है, लेकिन कोविड-19 के मामले में निराशाजनक पहलू यह है कि इसके उपचार के लिए अभी तक कोई कारगर दवा ईजाद नहीं हो पाई है। ■

# इम्यूनिटी बढ़ाने पर दें ध्यान



■ देव व्रत शर्मा
कार्यकारिणी सदस्य, राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड

**महान** वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन ने ऐसा क्यों कहा था कि 'यदि मधुमक्खी पृथ्वी की सतह से गायब हो जाती हैं, तो मनुष्य जीवन केवल चार साल तक ही संभव है'। इसलिए कहा था कि यदि मधुमक्खी नहीं होगी तो पॉलिनेशन की प्रक्रिया नहीं होगी और अगर पॉलिनेशन नहीं हुआ तो पैदावार नहीं होगी और अगर पैदावार नहीं हुई तो मानव जीवन की कल्पना ही संभव नहीं है। मधुमक्खी न केवल पॉलिनेशन में सहायक होती हैं, बल्कि मधुमक्खी से बहुत सारे उत्पाद भी मिलते हैं जैसे शहद, प्रोपॉलिस, पोलन, रॉयल जैली, मोम और बीवैनम। वैसे तो ये सारे उत्पाद अपने आप में महत्त्वपूर्ण हैं पर प्रोपॉलिस कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, जो नेचुरल एंटीबायोटिक, एंटी एलर्जिक, एंटी सेप्टिक, एंटी अस्थमा है।

**देखा गया है कि जो लोग कोरोना वायरस से प्रभावित थे उनमें 3.5 प्रतिशत लोगों की मौत हुई है जबकि 96.5 प्रतिशत लोग ठीक भी हुए हैं। मरने वाले 3.5 प्रतिशत लोगों में वो लोग हैं, जिनका इम्यून सिस्टम कमजोर था। अतः कोरोना वायरस से बचाव के लिए इम्यूनिटी बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों के सेवन से हम इससे बचाव कर सकते हैं। जैसा कि बताया गया है कि अपने हाथों को नियमित रूप से धोना कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय है**

अगर आज की बात करें तो सारी दुनिया कोरोना वायरस से परेशान और डरी हुई है। कोरोना वायरस के मामले भारत में भी लगातार बढ़ रहे हैं। अभी हमारे पास समय है जिससे हम एहतियाती कदम उठा सकते हैं।

फिलहाल, कोरोना वायरस की रोकथाम एवं उपचार के लिए कोई दवा या वैक्सीन नहीं है। ऐसे में आप अपनी सेहत पर विशेष ध्यान दें। नियमित रूप से हाथ धोएं। खांसते और छींकते समय नाक और मुंह पर रूमाल या टिश्यू पेपर से रखें। जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों उनसे दूरी बनाकर रखें, भीड़भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें। इम्यूनिटी बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों के सेवन से हम कोरोना वायरस से बचाव कर सकते हैं।

### हाथ धोना न भूलें

देखा गया है कि जो लोग कोरोना वायरस से प्रभावित थे उनमें 3.5 % लोगों की मौत हुई है जबकि 96.5 % लोग ठीक भी हुए हैं। मरने वाले 3.5 % लोगों में वो लोग हैं, जिनका इम्यून सिस्टम कमजोर था। अतः कोरोना वायरस से बचाव के लिए इम्यूनिटी बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों के सेवन से हम इससे बचाव कर सकते हैं। जैसा कि बताया गया है कि अपने हाथों को नियमित रूप से धोना कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय है। वहीं, दूसरी ओर रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए इन चीजों का सेवन भी कर सकते हैं: अदरक, तुलसी, कच्ची हल्दी, शहद और



गिलोय का काढ़ा (दो या तीन बार)।

एक चम्मच शहद और 3-5 एमएल प्रोपॉलिस मिला कर दिन में दो बार लेने से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। आंवले और शहद को साथ में लें या आंवले का मुरब्बा, जो शहद में बना हो, लें। लहसुन की दो कली और शहद को रोजाना साथ में लें क्यों कि इसमें एलिसिन पाया जाता है, जिसके सेवन से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। ■

**प्रोपॉलिस मधुमक्खियों द्वारा एकत्र किया जाता है। यह पेड़ के रेजिन, फूल-कलियों और अन्य वनस्पति ऊतकों से मिलता है। संग्रह के समय मधुमक्खियां अपने मोम और एकत्रित रेजिन को मिला कर अपने घर की दरारें, अवांछित छिद्र बंद करने, बाहरी इन्फेक्शन, बीमारी और अपने घर के चारों ओर घुसपैठियों (जैसे चीटियां) से रक्षा के लिए उपयोग में लाती हैं। प्रोपॉलिस में एस्टर, फैटी एसिड, कार्बोहाइड्रेट, टेरेपीनोइड जैसे विभिन्न यौगिक होते हैं। विटामिन और अर्काबनिक पदार्थ और कई चिकित्सीय गुण होते हैं, जैसे नेचुरल एंटीबायोटिक, एंटी एलर्जिक, एंटी सेप्टिक, एंटी अस्थमा और एंटीवायरल गतिविधियां। इन फायदों की वजह से मधुमक्खी पालक इस प्रोपॉलिस स्ट्रिप का उपयोग करके, जो बी हाइव की शीर्ष सलाखों पर रखी जाती हैं, उससे खुरच कर इकट्ठा करती हैं, जो मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी है।**



**बीते 100 सालों में मानवता के लिए संकट खड़ी करने वाली कुछ प्रमुख महामारियां**

| महामारी | वर्ष | मरे |
|---|---|---|
| स्पैनिश फ्लू | १९१८-१९१९ | ४ करोड़ |
| एशियन फ्लू | १९५७-१९५८ | ११ लाख |
| हांगकांग फ्लू | १९६८-१९७० | १० लाख |
| एचआईवी(एड्स) | १९८१-जारी | २.५-३.५ करोड़ |
| सार्स फ्लू | २००२-०३ | ७७० |
| स्वाइन फ्लू | २००८-१० | १-२ लाख |
| इबोला | २०१४-२०१६ | १ लाख |
| मर्स | २०१५-जारी | १ लाख |

स्रोत - विश्व आर्थिक मंच

# बचाव और उपचार के उपाय हैं आयुर्वेद में



■ डॉ. आरपी पाराशर
राष्ट्रीय अध्यक्ष, इंटीग्रेटिड मेडिकल एसोसिएशन एवं चिकित्सा अधीक्षक, पंचकर्म हास्पिटल, नॉर्थ दिल्ली म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन, दिल्ली

**कोरोना** वायरस पशुओं में पाया जाने वाला आम वायरस है जो कभी-कभी मनुष्य के शरीर को भी संक्रमित कर देता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोना को महामारी घोषित करने के मद्देनजर इसके फैलाव को रोकने के लिए सतर्कता बरतना आवश्यक है। इस वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए आयुर्वेद में समुचित इलाज उपलब्ध है। साफ-सफाई रखने और भीड़ भरी जगहों में जाने से बचने के अलावा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी न आने देना इस रोग से बचाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चे, बूढ़े और ऐसे व्यक्ति जिनकी इम्यूनिटी कमजोर हो, वे आसानी से इसकी गिरफ्त में आ सकते हैं। रोग से बचाव के लिए न तो कोई वैक्सीन उपलब्ध है और न ही एलोपैथी में कोई इलाज। खांसी, जुकाम, नजला और बुखार इसके सामान्य लक्षण हैं, जिनके चलते जल्दी इस रोग का पता नहीं लग पाता। दरअसल, सर्दी के मौसम में ठंड के कारण शरीर की इम्यूनिटी (रोग प्रतिरोधक प्रणाली) वैसे ही कमजोर हो जाती है जिससे बीमार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है।

### असरदार नुस्खे :

- तुलसी, अदरक, लौंग, काली मिर्च, सौंठ, वसाका, गिलोय और छोटी पिप्पली को दूध, चाय या पानी में उबाल कर दिन में दो-तीन बार पीने से इम्यूनिटी में वृद्धि होती है।
- सौंठ, काली मिर्च और पिप्पली की गोली त्रिकटु के नाम से बाजार में उपलब्ध है। गिलोय अथवा गुडुची की गोली भी आयुर्वेदिक दवाओं की दुकान से आसानी से मिल सकती है।
- दूध में अश्वगंधा, हल्दी, मुनक्का और खजूर उबाल कर लेने से इम्यूनिटी के स्तर में तुरंत सुधार होता है। बच्चों और बुजुर्गों के लिए इनका प्रयोग विशेष रूप से प्रभावी है।
- गिलोय, भुंई, आंवला, संतरा, सौंठ, हल्दी, मौसमी, अंगूर और आंवले का प्रयोग इन दिनों नियमित रूप से करना चाहिए।
- आयुर्वेदिक दवाओं में तालीशादिचूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, लक्ष्मी विलास रस, चंद्र अमृत रस, टंकण भस्म, वासावलेह, कंटकारी अवलेह, अगस्त्य हरीतकी आदि दवाओं का सेवन चिकित्सक की सलाह से करना चाहिए।
- वातावरण को कोरोना सहित अन्य वायरस या बैक्टीरिया आदि से मुक्त रखने के लिए अगर, तगर, लौंग, इलायची, कपूर, गुग्गल, जावित्री आदि जड़ी-बूटियों को आग में जलाकर इनका धूपन करें।

### सलाह :

- आम लोगों को सलाह है कि अपने आप को ठंड से बचाएं, ठंडी तासीर वाले भोजन का परहेज करें और गरमगरम सूप, चाय, दूध या पानी का सेवन लगातार करते रहें।
- यदि खांसी, जुकाम, सर दर्द, बुखार आदि लक्षण हों तो ऊपर बताई दवाओं का काढ़ा पीकर कंपल लेकर पसीना लें। इससे लक्षणों में तुरंत आराम मिलेगा और रोग भी आसानी से खत्म हो जाएगा।
- नाक साफ करने के बाद सुबहशाम अणु तेल की दो-दो बूंदें दोनों नथुनों में डालें।
- चूंकि रोग हवा और पशुओं के माध्यम से फैलता है, इसलिए समुद्री भोजन और मांसाहार से परहेज रखें। दिल्ली सहित अधिकतर शहरों का पानी प्रायः प्रदूषित रहता है, इसलिए कच्चा सलाद खाने से बचें। ■ **प्रस्तुतिः ज्ञानप्रकाश**

## होम्योपैथ में इलाज संभव



■ डॉ. आदित्य कौशिक
कंसल्टेंट, सर गंगा राम हॉस्पिटल

इस प्राचीन पद्धति में रोगी की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जाती है। इलाज बीमारी की स्टेज पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग इलाज भी हो सकता है। यह व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता पर निर्भर करता है। आर्सेनिक एल्बम इसकी एक दवा है, जो रोग होने से पहले दी जा सकती है ताकि शरीर में विषाणु सक्रिय न हो सकें। अब तक के शोधों से प्रमाणित हो चुका है कि यह दवा रोगी के शरीर की कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता को तेजी से बढ़ाती है। इसके अलावा, एक दवा इन्फ्लेशन इनफ्लूएंजिनम भी है, जिसका हम इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर रोगी को सादा पानी पीने से लाभ मिलता है तो हिपर सल्फर नाम की औषधि का इस्तेमाल किया जा सकता है। बीमारी के दूसरे और तीसरे चरण में जब निमोनिया हो जाता है, तो फास्फोरस दवा का इस्तेमाल लाभकारी है। स्वच्छता जीवन का अभिन्न अंग है। स्वच्छता विभिन्न रोगों से हमें बचाती है। इसलिए भोजन करने से पहले या बाहर से आने के पहले हमें हाथों को धोना चाहिए। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। ■

## कोरोना वायरस महामारी के फैलने के 4 चरण

**भारत अभी दूसरे चरण में है, तीसरे से बचने के लिए कवायद जारी**



**पहला-** वे लोग कोरोना वायरस से संक्रमित पाये गए जो दूसरे देश से भारत में आए और उनमें पहले से ही कोरोना के विषाणु थे

**दूसरा-** स्थानीय स्तर पर संक्रमण फैलता है, लेकिन ये वे लोग होते हैं जो किसी ना किसी ऐसे संक्रमित शख्स के संपर्क में आए जो विदेश यात्रा करके लौटा हो

**तीसरा-** 'कम्युनिटी ट्रांसमिशन' मतलब जब कोई व्यक्ति सीधे तौर पर संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आए बिना या संक्रमित देश की यात्रा किए बिना ही इसका शिकार हो जाता है

**चौथा-** जब संक्रमण स्थानीय स्तर पर महामारी का रूप ले लेता है

## क्या आधी आबादी आएगी चपेट में?

कोरोना महामारी पर अध्ययन में जुटे दुनिया के वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी की है कि दुनिया की करीब 40 फीसद बालिग आबादी कोरोना वायरस की गिरफ्त में आ सकती है। हॉवर्ड यूनिवर्सिटी के महामारी विभाग के प्रमुख प्रो. मार्क लिप्सिटक ने कोरोना वायरस के विस्तार की रफ्तार का अध्ययन करने के बाद भविष्यवाणी की है कि दुनिया की कुल करीब 7.5 अरब की आबादी में करीब 3.5 अरब लोगों तक यह वायरस पहुंच सकता है। लेकिन करीब 80 से 90 फीसद लोग मामूली सर्दी, जुकाम की दवा लेकर कोरोना का मुकाबला करने में सफल हो जाएंगे। सिर्फ10 से 15 फीसद पर ही इसका गंभीर असर होगा और इनमें भी 3 से 4 फीसद लोगों की ही मौत होगी जबकि दूसरी महामारियों में मृत्यु दर 10 से 30 फीसद तक रही है। वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि कोरोना वायरस के विस्तार के लिहाज से आने वाले 4-5 हफ्ते बेहद चुनौतीपूर्ण हैं। लेकिन हाल के दिनों में चीन ने जिस तरह इस महामारी को फैलने से रोका है और भारत ने जिस तरह कोरोना को दूसरे चरण में ही काबू में कर लेने का संकल्प लिया है, उसने वैज्ञानिकों को भी अपनी भविष्यवाणी बदलने के लिए मजबूर किया है। अब खुद मार्क लिप्सिटक भी मानने लगे हैं कि यह वायरस शायद इतना नहीं फैल पाएगा। सरकारों की पहल और लोगों की जागरूकता से ही इसके विस्तार पर अंकुश लगाया जा सकता है। ■



**क्या क्या कदम उठाए विभिन्न देशों ने**

**चीन -** हुबेई प्रांत और यहां रहने वाले 5.6 करोड़ लोगों को क्वारंटाइन करने (घर से बाहर निकलने और किसी से मिलने जैसी पाबंदियां लगाना) और कोरोना की चपेट में आए लोगों के इलाज के लिए महज 10 दिनों में एक अस्थायी अस्पताल का निर्माण

**इटली-** यूरोप के अब तक के सबसे सख्त लॉकडाउन को लागू किया है। इटली ने अपनी पूरी छह करोड़ की आबादी को लॉकडाउन में डाल दिया। खाने और दवा को छोड़कर सभी दुकाने बंद। एक जगह पर लोगों के इकट्ठे होने पर रोक, घरों में रहने की सलाह। यात्रा कर रहे हर शख्स को इसका मकसद बताने वाला कागज साथ लेकर चलना जरूरी। स्कूल और विश्वविद्यालय बंद

- कुल 29 देशों में स्कूलों को बंद किए गए
- डब्ल्यूएचओ ने सरकारों को अपने देश और व्यवस्था की जरूरत के हिसाब से अपने कदमों को तय करने के लिए कह रहे हैं

**दक्षिण कोरिया-** लॉकडाउन का सहारा लिये बिना सफलतापूर्वक लड़ाई जारी। सरकार सड़कों और ड्राइवरों को उनकी कारों में टेस्ट कर रही है। इसके लिए मोबाइल फोन और सैटेलाइट तकनीक का इस्तेमाल

**अमेरिका-** 26 यूरोपीय देशों की यात्रा पर पाबंदियां लगाईं। ये पाबंदियां शेनज़ेन के बॉर्डर-फ्री ट्रैवल इलाकों के देशों से आने वाले यात्रियों पर लगाई गई हैं

**ईरान-** सरकार ने मेडिकल चेक पॉइंट्स बनाए हैं और लोगों से यहां न जाने के लिए कहा है

**सऊदी अरब-** कातिफ प्रांत को बंद कर दिया है। कातिफ में ही सऊदी अरब के कोरोना के सबसे ज्यादा मामले दर्ज किए गए हैं

**जापान-** अप्रैल तक अपने स्कूलों को बंद रखा है

**ब्रिटेन-** हाल-फिलहाल में इटली की यात्रा कर चुके लोगों को 14 दिन तक दूसरों से अलग रहने के लिए कह रही है

■

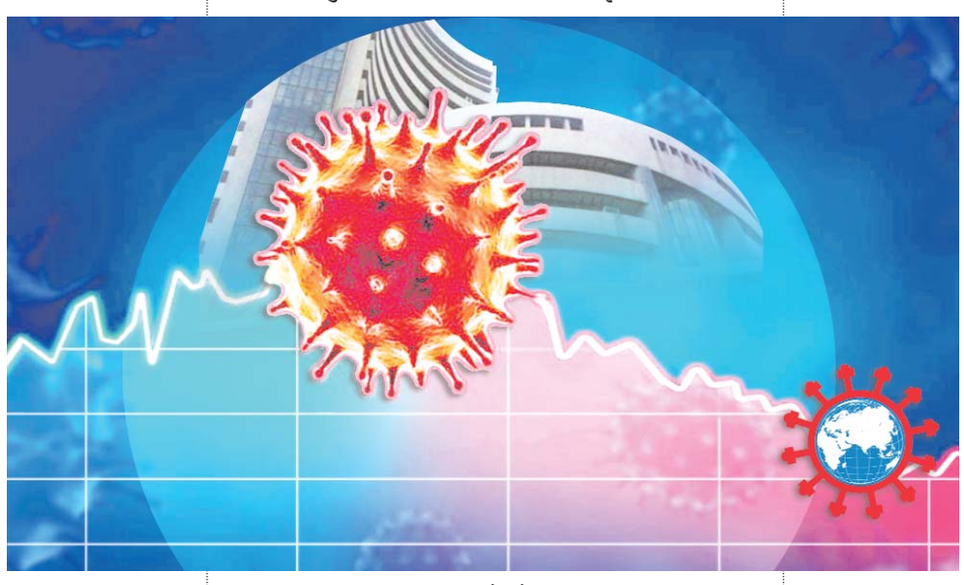
# केंद्रीय बैंकों, सरकारों के दखल के बावजूद आर्थिक मंदी

**आईएमएफ ने शुरुआती अनुमान के तौर पर कहा है कि कोरोना वायरस से वैश्विक आर्थिक वृद्धि दर एक प्रतिशत कम होगी। बैंक ऑफ अमेरिका ने इसी सप्ताह दो बार अनुमान में कटौती की है और ताजा अनुमान के मुताबिक वैश्विक आर्थिक वृद्धि दर २०२०-२१ में महज ०.४ प्रतिशत रह सकती है। बैंक ऑफ अमेरिका ने भारत की वृद्धि दर का अनुमान भी घटा कर पूरे वित्त वर्ष के लिए ४.१ प्रतिशत कर दिया है**



■ सुभाष सिंह सुमन
वरिष्ठ आर्थिक पत्रकार

**कोरोना** वायरस ने मानव सभ्यता के समक्ष अभूतपूर्व संकट ला दिया है। यह वैश्विक महामारी प्रकृतिजनित है, या मानवनिर्मित जैविक हथियार? इस बात को लेकर बहस होती रहेंगी, सिद्धांत गढ़े जाते रहेंगे। एक सूक्ष्म वायरस, जिसे हम नंगी आंखों से देख भी नहीं सकते, ने अंतरिक्ष में भी झंडे गाड़ चुकी मानव जाति को बौना साबित कर दिया है। चीन के वुहान प्रांत से शुरू हुआ यह संक्रमण सौ से अधिक देशों को चपेट में ले चुका है, हजारों लोगों की मौत हो चुकी है, लाखों लोग संक्रमित हो चुके हैं और इसके दंश के भयावह होते जाने की ही आशंकाएं हैं। इकोनॉमिस्ट इंटेलीजेंस यूनिट का कहना है कि यह वायरस विश्व की आधी आबादी को संक्रमित कर सकता है। इससे भी बड़ा संकट आर्थिक मोर्चे पर मंडरा रहा है। व्यापार युद्ध के दौर को अर्थव्यवस्था ने जैसेतैसे झेल लिया और मंदी की आशंकाओं को निर्मूल साबित करते हुए तेज वृद्धि की राह भी पकड़ ली लेकिन अचानक आई इस विपदा ने वृद्धि के इंजन को बेपटरी कर दिया है।



चीन को विश्व का कारखाना कहा जाता है। दुनिया भर में दवा उद्योग से लेकर वाहन उद्योग तक चीन की आपूर्ति पर निर्भर हैं। चीन में संक्रमण फैलने से वहां कारखाने बंद हुए, कच्ची सामग्रियों की आपूर्ति बाधित हुई, परिणामतः पूरी दुनिया में उद्योग जगत पर असर पड़ा। तब तक संक्रमण चीन में ही सीमित था, लेकिन अब यूरोप संक्रमण का केंद्र बन चुका है। अमेरिका, भारत, अफ्रीका के देश और अन्य तमाम देश कोई अछूता नहीं रह गया। ईरान, इटली और स्पेन में स्थिति अधिक भयावह हो चुकी है। विश्व बैंक और विश्व स्वास्थ्य संगठन की संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार इस तरह की वैश्विक महामारी से विश्व की अर्थव्यवस्था को 2.2%-4.8% नुकसान होने की आशंका रहती है। ऐसी स्थिति में सार्वजनिक स्वास्थ्य, कृषि, व्यापार और पर्यटन एवं यात्रा से जुड़े उद्योग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। विनिर्माण क्षेत्र पर अल्पकालिक असर होता है लेकिन सेवा क्षेत्र की बुनियाद हिल जाने की आशंका रहती है। कारखाने, कंपनियां बंद होती हैं तो प्रत्यक्ष असर राजस्व संग्रह पर होता है। इनके बंद होने से भारी संख्या में लोग बेरोजगार होते हैं और अंततः इसका असर सार्वजनिक खर्च पर पड़ता है, यह महामारियों का परोक्ष असर है।

### मंदी के अनुमान

आईएमएफ ने शुरुआती अनुमान के तौर पर कहा है कि कोरोना वायरस से वैश्विक आर्थिक वृद्धि दर कम से कम एक प्रतिशत कम होगी। बैंक ऑफ अमेरिका ने इसी सप्ताह दो बार अनुमान में कटौती की है और ताजा अनुमान के हिसाब से वैश्विक आर्थिक वृद्धि दर 2020-21 में महज 0.4 प्रतिशत रह सकती है। बैंक ऑफ अमेरिका ने भारत की वृद्धि दर का अनुमान भी घटा कर जून तिमाही और पूरे वित्त वर्ष के लिए क्रमशः 3.1 प्रतिशत और 4.1 प्रतिशत कर दिया है। 2020-21 में अमेरिका की जीडीपी के 0.8 प्रतिशत गिरने और चीन की वृद्धि दर महज डेढ़ प्रतिशत रहने का अनुमान है। स्पष्ट है कि मंदी अब सिर्फ कयास नहीं, बल्कि ऐसा सच है जिससे भागा नहीं जा सकता। कोरोना वायरस महामारी के कारण हम आर्थिक नरमी के बाद आर्थिक मंदी की दहलीज पर आ चुके हैं।

तय है कि कोरोना वायरस के आर्थिक असर को टाला नहीं जा सकता लेकिन कम जरूर किया जा सकता है। दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों ने इसे लेकर तत्काल कदम उठाए हैं। अमेरिका में फेडरल रिजर्व ने मुख्य ब्याज दर को घटाकर लगभग शून्य कर दिया है। इससे पहले फेडरल रिजर्व ने 2008 के आर्थिक संकट में ऐसा कदम उठाया था। न्यूजीलैंड के रिजर्व बैंक ने मुख्य ब्याज दर को घटाकर 0.25 प्रतिशत कर दिया है, यह इसके इतिहास की सबसे कम दर है। बैंक ऑफ इंग्लैंड ने भी ब्याज दर को अब तक के सबसे निचले स्तर 0.1 प्रतिशत पर ला दिया है। ऑस्ट्रेलिया में ब्याज दर ऐतिहासिक 0.25 प्रतिशत के निचले स्तर पर आ गई है। इनके अलावा चीन, ताईवान, इंडोनेशिया, जापान जैसे कई देशों में भी केंद्रीय बैंकों ने इसी तरह के कदम उठाए हैं। केंद्रीय बैंकों द्वारा आपातकालीन कदम उठाए जाने का स्पष्ट कारण है कि कंपनियों को संकट से जूझने के लिए सस्ता कर्ज मिल सके ताकि उन्हें छंटनी या बंदी से बचाव मिले, लोगों को सस्ता कर्ज मिल सके ताकि वे इलाज समेत अन्य बुनियादी खर्चों को वहन कर सकें।

प्रसिद्ध अमेरिका पत्रकार डेविड इग्नेटियस का कथन है, 'आर्थिक संकट के दौर में सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि सरकार एक्सेलेरेटर को दबाए रखे'। सरकारें इस संकट में इसी हिसाब से काम करती दिख भी रही हैं। अमेरिका ने 500 अरब डॉलर, ब्रिटेन ने 400 अरब डॉलर और जर्मनी ने 615 अरब डॉलर के पैकेज की घोषणा की है। फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैंड, चीन आदि देशों के अलावा यूरोपीय संघ, एशियाई विकास बैंक, आईएमएफ जैसे बहुराष्ट्रीय संगठनों ने भी राहत पैकेज दिए हैं। केंद्रीय बैंकों के पास अभूतपूर्व संकट से निपटने के सीमित उपाय हैं। मुख्य ब्याज दर को एक सीमा से अधिक कम किया जाना अन्य आर्थिक जोखिमों को बुलावा देना होता है। ऐसे में तमाम सरकारों को आगे आना होगा। भारत में भी रिजर्व बैंक ने अगले महीने रेपो दर घटाने के संकेत दिए हैं। सरकार को भी शीघ्र ही कंपनियों और कर्मचारियों के लिए विशेष राहत पैकेज की घोषणा करनी चाहिए। यदि सामने आया संकट अभूतपूर्व है, तो उससे युद्ध के लिए हथियार भी अभूतपूर्व आजमाने होंगे। भले सूख जाएं तेल के सारे कुएं, फीकी पड़ जाए सोने की चमक, खाक हो जाएं दुनिया भर की मुद्राएं, सभ्यता के अगले अध्याय लिखे जाने की कोशिशें कम नहीं होनी चाहिए। ■

# भारतीय अर्थव्यवस्था भी प्रभावित



■ प्रो. रामसिंह
दिल्ली स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स

**कोविड-19** ने हजारों लोगों का जीवन लील दिया है। इसे वैश्विक महामारी घोषित किया जा चुका है। चीन से शुरू होकर इस वायरस ने समूची दुनिया को चपेट में ले लिया है। दुनिया भर में हजारों लोग जान से हाथ धो चुके हैं। चीन से ज्यादा मौतें दुनिया की दूसरी जगहों जैसे यूरोपीय देश खासकर इटली तथा दक्षिण कोरिया, ईरान और अमेरिका में हुई हैं। भारत में भी कोरोना वायरस से ग्रस्त दो सौ मामलों की पुष्टि हो चुकी है। वैश्विक आर्थिक व्यवस्थाओं के लिए कोरोना वायरस ने कहर बरपा दिया है। अमेरिका, यूके और यूरोपीय बाजारों में भय का माहौल होने से विश्व भर के शेयर बाजारों ने डुबकी लगा दी है। हालांकि फेडरल रिजर्व (अमेरिकी केंद्रीय बैंक) ने ब्याज दरों को करीबकरीब शून्य कर दिया है, फिर भी वोलाटिलिटी इंडेक्स (शेयर बाजार में अनिश्चितता का पैमाना) उछाल मारकर 2009 के बाद से सबसे ऊंचे पायदान पर पहुंच गया है। विश्व बैंक के मुताबिक, वायरस के हमले से विश्व जीडीपी का 1.0 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है।

भारत भी कोई अपवाद नहीं है। सोमवार (16 मार्च) भारत के शेयर बाजार बीते 30 महीनों के सर्वाधिक निचले स्तर पर पहुंच चुके थे। विदेशी धन बाहर जा चुका है, अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया टूटकर 74.27 के स्तर पर जा पहुंचा है। एक अनुमान के मुताबिक, महामारी वृद्धि दर में आधा प्रतिशत की कमी ला देगी। राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्थिति की गंभीरता की ओर ध्यान दिलाते हुए रविवार को 'जनता कर्फ्यू' के लिए आह्वान किया है। उन्होंने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन के नेतृत्व में त्वरित आर्थिक कार्य दल के गठन की घोषणा की। दरअसल, भारतीयों की आजीविका ही दांव पर लग गई है। भारत को तत्काल कुछ करना होगा नहीं तो हमें बेहद ज्यादा आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। कोरोना वायरस भारतीय अर्थव्यवस्था की तमाम गतिविधियों फार्मास्यूटिकल्स से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर आईटी से लेकर खुदरा सेवाओं से लेकर ईकॉमर्स, आतिथ्य एवं पर्यटन, खानपान, मनोरंजन से लेकर रियल एस्टेट तक को प्रभावित करेगा। भारत फास्फेट आधारित उर्वरक चीन से आयात करता है। चीन में उत्पादन ठप हो जाने से भारत में उर्वरकों की कमी हो जाएगी जिससे खेती की आदान लागत बढ़ना और उत्पादन में कमी आना तय है।

### दवा उद्योग पर संकट

भारत की दवाओं के मामले में लाभ की जो स्थिति थी, वह खतरे में पड़ गई है। भारत फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र में प्रमुख किफायती दवा आपूर्तिकर्ता देश है, जो अपने नागरिकों के साथ ही विश्व के गरीब लोगों को दवाओं की आपूर्ति करता है। लेकिन दवाओं के उत्पादन के लिए भारतीय फार्मा कंपनियां चीन से आपूर्त सस्ते 'एक्टिव फार्मास्यूटिकल इंग्रेडिएंट (एपीआई) पर निर्भर हैं। कोविड-19 ने चीन से एपीआई की आपूर्ति को बाधित कर दिया है। इसलिए भारतीय कंपनियां कच्चे माल के लिए तस्करी पर निर्भर होने को विवश हैं। कोविड-19 ने अमेरिका और चीन में व्यापार युद्ध को फिर भड़का दिया है क्योंकि दोनों वायरस फैलाने के लिए एक दूसरे पर आरोपप्रत्यारोप लगा रहे हैं। अमेरिकी और यूरोपीय कंपनियों, जो अपनी आपूर्ति के लिए चीन पर आश्रित हैं, के लिए यह बुरी खबर है। सच तो यह है कि महामारी ने वैश्विक वेल्यू चेन्स (जीवीसी) पर आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए खतरा पैदा कर दिया है।

**न केवल लोगों का स्वास्थ्य, बल्कि भारतीयों की आजीविका तक दांव पर लग गई है। भारत को पूरी सक्रियता दिखानी होगी वरना हमें बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान हो चुका होगा**

इसलिए यह वैश्विक समस्या है। आधुनिक साजसामान के उत्पादन के लिए विभिन्न तकनीकों के इस्तेमाल से तैयार किए गए हिस्सेपुर्जों की जरूरत पड़ती है। आधुनिक उत्पादन प्रक्रियाओं में उत्पादों की डिजाइनिंग भी महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती है। भिन्न देशों से भिन्नभिन्न फायदे मिलते हैं। इसलिए किसी एक उत्पादन के भिन्न हिस्सेपुर्जे विभिन्न देशों में तैयार किए जाते हैं। कंपनियां अपने उत्पादन को लाभकर बनाने यानी लागत को कम से कम रखने के लिए विभिन्न देशों में तैयार हिस्सेपुर्जों की आपूर्ति जीवीसी के जरिए सुनिश्चित करती हैं। परंपरागत रूप से जीवीसी के तहत विभिन्न देशों में उत्पादन और डिजाइनिंग गतिविधियों के विभिन्न चरणों को समन्वित किया जाता है।

### जीवीसी कंपनियों की स्थिति नाजुक

उदाहरण के लिए स्मार्टफोन जैसे कि आईफोन या सैमसंग के फोन को लें। इसके उत्पादन में चिप्स, एक्सिलिरोमीटर, जाइरोस्कोप, कैमरा, एलसीडी स्क्रीन, बैटरी और सैकड़ों पुर्जों की जरूरत होती है। इन हिस्सोंपुर्जों को अलग-अलग देशों से लाकर अंतिम उत्पाद तैयार करने के लिए किसी एक देश में इकट्ठा किया जाता है। चूंकि जीवीसी से कंपनियों को लागत में कमी और बड़े पैमाने पर उत्पादन के लाभ मिलते हैं। ऐसे में उनके उत्पादन की प्रक्रिया किसी भी अड़चन से प्रभावित हो सकती है। चीन और दक्षिण कोरिया में कोरोना वायरस के प्रकोप ने अन्य देशों के समक्ष स्मार्टफोन, कंप्यूटर, कार, दवाओं और अन्य विभिन्न क्षेत्रों की आपूर्ति श्रृंखला को बाधित करके संकट पैदा कर दिया है। महामारी के कारण वैश्विक वायु यातायात 20 प्रतिशत से ज्यादा कम हो चुका है और वायु सेवाओं की लागत 120 बिलियन अमेरिकी डॉलर से ज्यादा बढ़ चुकी है। पर्यटन, आतिथ्य, खानपान, खुदरा व्यापार और रियल एस्टेट क्षेत्र प्रमुख रोजगार प्रदाता क्षेत्र हैं, जो सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं। इन क्षेत्रों वेतन देने और अन्य भुगतान करने में लाले पड़ सकते हैं। बीते तीन हफ्तों के दौरान इन क्षेत्रों को होने वाली डिजिटल पेमेंट्स 30 प्रतिशत से ज्यादा गिर चुकी हैं। हमारे सॉफ्टवेयर निर्यात तथा अमेरिका में हमारी आईटी सेवाओं पर खासा प्रतिकूल असर पड़ेगा। सरकार को चाहिए कि वित्तीय घाटे लक्ष्य में एक प्रतिशत की ढील दे ताकि अर्थव्यवस्था को 2.2 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक समर्थन देने में सरकार को आसानी हो। पेट्रोल और डीजल पर तीन रुपये प्रति लीटर की एक्साइज ड्यूटी बढ़ाने से सरकार के पास ज्यादा धन की व्यवस्था हो सकती है। इस पैसे के कुछ हिस्से का इस्तेमाल पीएमकिसान तथा मनरेगा से जुड़े लोगों के जनधन खातों के तहत होने वाले प्रत्यक्ष नकद हस्तरण में हो सकेगा। इसके अलावा, वित्त मंत्री की अध्यक्षता में बनी टास्क फोर्स तथा भारतीय रिजर्व बैंक को इन उपायों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए जिन्हें सरकार अपना सकती है। छोटी कंपनियों और कारोबारियों के लिए कुछ समयसीमा तक ऋण लौटाने की बाध्यता खत्म की जाए। ऋणों को एनपीए घोषित करने की समयसीमा को छह और महीने बढ़ाया जाए। उड्डयन, वस्त्र, होटल, ऑटोमोबाइल्स तथा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र भी खासे प्रभावित हो रहे हैं, इन क्षेत्रों में नौकरियां छूट रही हैं और ऋणों को ये क्षेत्र लौटा नहीं पा रहे। इन क्षेत्रों के लिए एक समग्र योजना तैयार किया जाना जरूरी है। संभव हो तो इन क्षेत्रों और एनबीएफसी को डूबत परिसंपत्ति कोष से धन मुहैया कराया जाए। चीन में आर्थिक गतिविधियों के धड़ाम से गिर पड़ने से हमारा वहां से आयात कम हो जाएगा। इसलिए हमारे निर्यात खासकर फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों में खासे प्रभावित होंगे। लेकिन चीन से हमारा आयात चीन को निर्यात की तुलना में ज्यादा गिरेगा। इसलिए विदेशी मुद्रा विनिमय की दृष्टि से चीन के साथ हमारा चालू खाते पर घाटा कम हो जाएगा।

### कच्चे तेल के दाम गिरेंगे

चीन और अन्य जगहों से मांग कम निकलने से वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दामों में गिरावट आने की संभावना है। इससे तेल के आयात पर भारत का खर्च कम हो जाएगा। पेट्रोल और डीजल पर शुल्क वृद्धि किए जाने का सरकार का फैसला सराहनी है। इससे वायरस और उसके फलस्वरूप होने वाले नुकसान की भरपाई करने के लिए पर्याप्त धन मुहैया हो सकेगा। इसके अलावा, इस्पात, रसायन समेत अनेक क्षेत्रों में भारत के लिए नये अवसर बनेंगे। कोरोना वायरस से चीन के उत्पादन और निर्यात पर बेहद प्रतिकूल असर पड़ेगा। ऐसे में भारत के लिए अवसर होगा कि इस्पात का उत्पादन बढ़ाकर निर्यात में इजाफा कर ले। इसी प्रकार, बल्क दवाओं, रसायनों, इंजीनियरिंग उत्पादों, ऑटो तथा समुद्री उत्पादों के मामले में भी भारत चीन की नाजुक स्थिति का फायदा उठा सकता है। भारत अपने घरेलू साधनों के बल पर अवसर का फायदा उठाने में समर्थ है। कोरोना वायरस के फैलाव पर ही आने वाले दिनों में वैश्विक वेल्यू चेन्स में बदलाव निर्भर करेगा। हम इस स्थिति का फायदा उठा सकते हैं। लेकिन हमें भी कोरोना वायरस का भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी अनेक तरीकों से तत्काल प्रभाव पड़ेगा। भारत को महामारी के मद्देनजर बढ़ने वाली स्वास्थ्य और आर्थिक लागतों कम से कम रखना होगा। केंद्र और राज्य सरकारों, अस्पताल श्रृंखलाओं, नागरिक समाज समूहो, कॉरपोरेट रेस्पोंसिबिलटी टीमों और मीडिया के बीच समन्वय से भारत इस वायरस के हमले से उबर सकता है। आने वाले हफ्ते या दिनों में स्पष्ट होगा कि महामारी के बरक्स भारतीय अर्थव्यवस्था किस रुख जाती है। ■

# संक्रमण का विस्तार रोकना सबसे बड़ी चुनौती

**इन** दिनों फैले कोरोना वायरस का असर केवल चीन और यूरोप तक सीमित नहीं रहा, बल्कि एशियाई देश अब इसकी चपेट में हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एशियाई देश ग्रोथ इंजन का काम करते हैं और अगर यहां कोरोना का संक्रमण तेजी से फैला तो उसका असर न केवल यहां की तेजी से बढ़तीं अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ेगा, बल्कि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था के मंदी की चपेट में आने का खतरा बढ़ जाएगा, जिससे वह अभी तक पूरी तरह से उबर भी नहीं पाई है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भारत और चीन ग्रोथ के दो मजबूत इंजन हैं। चीन के बाद भारत में भी कोरोना से संक्रमण के मामलों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। रिपोर्ट लिखे जाने तक यह संख्या करीब 150 तक पहुंच चुकी है। भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना का क्या और कितना असर होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस चुस्ती से इसके संक्रमण को फैलने से रोक पाते हैं। कमजोर मांग और निजी खपत में गिरावट की वजह से भारत की अर्थव्यवस्था पहले से ही सुस्ती में है। याद रहे कि तीसरी तिमाही में ग्रोथ रेट में मामूली सुधार के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था की ग्रोथ रेट 5 फीसदी से नीचे (4.7 फीसदी) ही रही है।

**कहां से कितने भारतीय सुरक्षित निकाले गए**



| देश | निकाले गए भारतीय |
|---|---|
| चीन | 766 |
| जापान | 124 |
| ईरान | 389 |
| इटली | 211 |

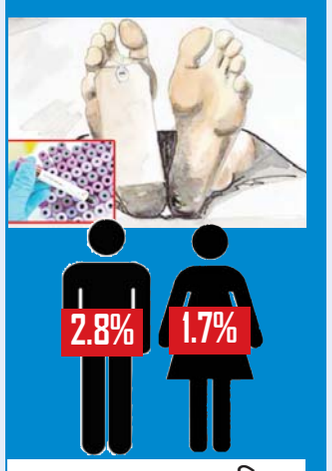
### विमानन कंपनियां पर कहर

कुछ दिनों पहले ही सेंटर फॉर एशिया पैसिफिक एविएशन (सीएपीए) ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि कोरोना वायरस से फैली महामारी की वजह से दुनिया भर की विमानन कंपनियां मई महीने तक दीवालिया हो जाएंगी। विमानन कंपनियों के बंद होने से न केवल लोगों की नौकरियां जाएंगी, बल्कि बैंकिंग व्यवस्था की मुश्किलों में और इजाफा होगा, जो पहले से ही मुश्किल में है। सीएपीए की रिपोर्ट के बाद भारतीय विमानन कंपनी गो एयर ने खराब स्थिति का हवाला देते हुए विदेशी पायलटों के अनुबंध को रद्द करना शुरू कर दिया है। फिलहाल, इस वायरस की वजह से सर्वाधिक प्रभावित सेक्टर्स एविएशन, टूरिज्म और एंटरटेनमेंट हैं। पिछले एक महीने के दौरान भारतीय एविएशन सेक्टर के स्टॉक्स धाराशायी हो चुके हैं। स्पाइस जेट के शेयर जहां करीब 55 फीसदी तक टूटे हैं, वहीं इंडिगो एयरलाइंस के शेयर में करीब 35 फीसदी से अधिक की गिरावट आई है। वहीं सेंसेक्स पिछले एक महीने करीब 30 फीसदी टूटकर पिछले तीन साल के न्यूनतम स्तर पर आ चुका है। एविएशन के साथ ही इंटरटेनमेंट सेक्टर्स और टूरिज्म सेक्टर की कंपनियों के शेयरों की भी जबरदस्त बिकवाली हुई है। वायरस के संक्रमण की वजह से लंबे समय तक मॉल और व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद रहते हैं, तो बैंकों के एनपीए का स्तर बढ़ने की संभावना बढ़ जाएगी, जो पहले से ही पूंजी संकट का सामना कर रहे हैं।

हालांकि, वित्त राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर का मानना है कि कोरोना की वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई असर नहीं होगा। राज्य सभा में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि कोरोना के फैलने के बाद के ताजा आंकड़े बताते हैं कि अर्थव्यवस्था पर कोई प्रतिकूल असर नहीं हुआ है। लेकिन कई रिपोर्ट्स बताती हैं कि इस वायरस के संक्रमण की वजह से अर्थव्यवस्था की रफ्तार को झटका लग सकता है। सरकार के प्राथमिक आकलन के मुताबिक वित्त वर्ष 2021 में ग्रोथ रेट में 0.3-0.5 फीसदी आने का अनुमान है। वहीं, स्वतंत्र अर्थशास्त्रियों का मानना है कि यह नुकसान 0.5 फीसदी से अधिक हो सकता है। मौजूदा वित्त वर्ष में ग्रोथ रेट के 5 फीसदी रहने का अनुमान है। पिछली तीन तिमाहियों में यह क्रमशः 5 फीसदी, 4.5 और 4.7 फीसदी रही है और अब अगली कुछ तिमाही तक इसमें किसी सुधार की संभावना भी क्षीण होती नजर आ रही है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 6-6.5 फीसदी की ग्रोथ रेट से आगे बढ़ने का अनुमान लगाया गया था लेकिन कोरोना की वजह से इस उम्मीद को भी झटका लग सकता है। कोरोना संक्रमण के इस जोखिम को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय रेटिंग एजेंसी मूडीज भी 2020 के लिए ग्रोथ रेट के अनुमान को घटाकर 5.3 फीसदी कर चुकी है।

**कोरोना पीड़ित (मृत्यु दर)**



| उम्र | मृत्यु प्रतिशत |
|---|---|
| 80... | 14.8% |
| 70-79 | 8.0% |
| 60-69 | 3.6% |
| 50-59 | 1.3% |
| 40-49 | 0.4% |
| 30-39 | 0.2% |
| 20-29 | 0.2% |
| 10-19 | 0.2% |
| 0-9 | कोई मामला नहीं |

ग्रोथ रेट को होने वाले नुकसान का आकलन इस अनुमान पर आधारित है कि वायरस का संक्रमण कितनी तेजी से फैलता है। अगर सरकार संक्रमण को रोकने में सफल रहती है तो होने वाले आर्थिक नुकसान का अनुमान भी उसी अनुपात में कम होगा। इसलिए फिलहाल सबसे बड़ी चुनौती वायरस के संक्रमण का विस्तार रोकने की है, जो भारत में दूसरे चरण में है यानी अभी यह केवल उन लोगों तक सीमित है, जो या तो इससे सीधे संक्रमित हैं, या संक्रमित व्यक्ति से जुड़े लोग। तीसरा चरण सामुदायिक स्तर पर संक्रमण का बढ़ना है और सरकार की पूरी कोशिश ऐसा होने से रोकने की है, जिसका सामना इटली समेत यूरोप के अन्य देशों को करना पड़ रहा है। वायरस से बढ़ते संक्रमण को दूसरे चरण में ही रोक कर उस पर काबू पा लेने की कोशिश हमें लॉकडाउन की स्थिति से बचा सकती है और यही हमारी अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ी छलांग साबित होगी।

■ प्रस्तुति : अभिषेक

**3.4 फीसद मृत्यु की वैश्विक दर है करोना प्रभावित लोगों में**



| दर | देश |
|---|---|
| इटली | 7.7% |
| ईरान | 5.6% |
| चीन | 3.9% |
| यूके | 3.6% |

स्रोत-विश्व स्वास्थ्य संगठन

# चीन की चूक से डर के आगोश में दुनिया



■ अभिषेक प्रताप सिंह
एसो. प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं चीन संबंधी मामलों के जानकार

**अब** जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर दुनिया भर में फैल रहे कोरोना संकट के लिए चीन को जिम्मेदार ठहराया है, तो यह जानना बहुत आवशयक है कि क्या वास्तव में कोरोना वायरस की प्रारंभिक रोकथाम के प्रति चीन की सरकार के ढुलमुल रवैये ने इस समस्या को आज दुनिया भर के लिए एक बड़ी महामारी बना दिया है। अब तक पूरे विश्व में लगभग दो लाख से अधिक लोग इससे पीड़ित हैं, और 8500 से अधिक मौत हो चुकी हैं। जर्मन की राष्ट्रपति मैर्केल ने इसे 'दूसरे विश्व युद्ध के बाद का सबसे बड़ा संकट' माना है।

चीन के बाद यूरोप के देश इस संकट का केंद्र बने हुए हैं, लेकिन विशेषज्ञों की राय में आगे चलकर अफ्रीकी महाद्वीप में भी संक्रमण के फैलने का डर ज्यादा है, जहां की कमजोर स्वास्थ्य प्रणालियों और एचआईवी, टीबी जैसी बीमारियों से प्रभावित आबादी इस खतरे के सामने ज्यादा असहनीय स्थिति में है। यदि हम क्रमवार अध्ययन करें तो इस समस्या से निपटने में चीन ने दो प्रमुख स्तरों पर कमी का परिचय दिया। एक तो वहां की 'आपातकालीन स्वास्थ्य व्यवस्था' का, जो कम से कम इस समस्या के उपजने के शुरुआती दिनों में तेजी में सक्रिय नहीं हो पाई और साथ ही प्रांत स्तर पर चीन के हुबेई प्रांत और वुहान महानगर के 'राजनीतिक प्रशासन' का गैरजिम्मेदाराना रवैया रहा। यह समस्या वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव डालती है। चौदह ट्रिलियन से अधिक की चीनी अर्थव्यवस्था वैश्विक वाणिज्य का केंद्र है।

जानना जरूरी है कि कोरोना वायरस, जो चीनी शहर वुहान में दिसम्बर, 2019 में उभरा था, रोगजनक के रूप में है जो गंभीर श्वसन सिंड्रोम या सार्स का कारण बनता है। 2003 में सार्स के प्रकोप से सीख लेने के बाद भी चीन में कोरोना प्रकोप से निपटने के लिए शीघ्रता और प्रभावशीलता का अभाव था। अग्रणी पत्रिका 'नेचर' द्वारा प्रकाशित अध्ययन में उद्धृत महामारी विज्ञानियों का कहना है कि चीन की प्रतिक्रिया में एक स्पष्ट दोष था कि 'यह बहुत देर से शुरू हुआ'। सीएनएन के मुताबिक, पहला मामला सामने आने के एक महीने बाद तक उन्होंने स्क्रीनिंग के उपाय नहीं किए। उस समय के दौरान 'अफवाहें' फैलाने के लिए नागरिकों को कथित रूप से गिरफ्तार किया गया और जो पत्रकार प्रकोप पर रिपोर्ट करने की कोशिश कर रहे थे, उन्हें हिरासत में लिया गया। अंत में राष्ट्रपति शी जिनिपंग ने आदेश दिया कि वायरस की 'पूरी तरह रोकथाम' होनी चाहिए। लेकिन यह सब 23 जनवरी, 2020 के बाद हुआ जब वुहान को पूरी तरह से बंद कर दिया गया। चीन में इस निर्णायक देरी से संक्रमित लोगों को व्यापक रूप आवागमन की छूट रही और वायरस आज वैश्विक महामारी का रूप ले चुका है। चीन की इस चूक का एक कारण चीन की राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त विरोधाभास भी है। चीन में समस्या यह है कि स्थानीय नेता अपने केंद्रीय नेतृत्व को नाराज नहीं करना चाहते। कारण, उनके क्षेत्र में समस्या की कोई भी खबर उनके प्रभाव और छवि को खतरे में डालती है। अस्थिरता सत्तावादी सरकारों को अस्थिर करती है; नागरिक अशांति और प्रेस की आलोचना उनके बड़े दुश्मन हैं। इसलिए किसी समस्या से निपटने के साथसाथ दबाने का भी प्रयास रहता है। किसी भी 'सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या' का समुचित प्रबंधन करने के लिए पारदर्शिता आवश्यक होती है। यहीं पर चीन ने बड़ी चूक की है, इससे उनके शासन मॉडल की प्रभावशीलता के अलावा एक विकसित देश और सक्षमस्वस्थ व्यवस्था के उनके दावों को भी नुकसान होगा। ■

MAGAZINES

# भारत में अभी कम्युनिटी ट्रांसमिशन के सबूत नहीं

**इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के महानिदेशक डॉ. बलराम भार्गव से कोविड-19 की मौजूदा स्थिति पर हुई बातचीत के प्रमुख अंशः**

**प्र: क्या कम्युनिटी ट्रांसमिशन हो चुका है यह वायरस?**
उः भारत में कम्युनिटी ट्रांसमिशन के सबूत नहीं मिले हैं। यह महामारी अभी भी अपने दूसरे चरण यानी 'लोकल ट्रांसमिशन' पर है। बावजूद इसके आईसीएमआर ने परीक्षण के बंदोबस्त बढ़ाए हैं। इसके लिए उसने निजी लेबोरेट्रीज से गठजोड़ किया है।

**प्र: क्या है कम्युनिटी ट्रांसमिशन, इसके खतरे क्या हैं?**
उः मेडिकल साइंस के टर्म में दरअसल, वायरस या फिर किसी भी बीमारी की कम्युनिटी ट्रांसमिशन थर्ड स्टेज होती है। यह तब आती है जब एक बड़े इलाके के लोग वायरस से संक्रमित पाए जाते हैं। कम्युनिटी ट्रांसमिशन में कोई ऐसा व्यक्ति भी संक्रमित हो सकता है जो न तो कोरोना वायरस से प्रभावित देश से लौटा है और न ही वह किसी दूसरे कोरोना वायरस संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आया हो। इस स्टेज में यह पता नहीं चलता कि कोई व्यक्ति कहां से संक्रमित हो रहा है।

**प्र: क्या है लोकल ट्रांसमिशन, पहली स्टेज किसे कहते हैं?**
उः अभी देश में कोरोना वायरस दूसरे चरण यानी लोकल ट्रांसमिशन के स्टेज में है। यह तब आती है जब विदेश से लौटे संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से उसके परिजन, रिश्तेदार आदि संक्रमित होना शुरू होते हैं। लोकल ट्रांसमिशन में यह पता होता है कि वायरस कहां से फैल रहा है? इस तरह उस स्रोत के संपर्क में आए लोगों की पहचान आसान होती है। वहीं, पहली स्टेज उसे कहते हैं जब प्रभावित देशों से आने वाले लोगों में संक्रमण पाया जाता है।

**प्र: कौन सी स्टेज अति खतरनाक मानी जाती है, पहचान और बचे कैसे? चीन में भयावह हालत के कारण क्या हो सकते हैं?**
उः चौथी स्टेज खतरनाक है। चीन में यह अपनी चौथे स्टेज में था। ऐसी स्थिति में इसका हल खोज पाना कठिन होता है। 500 रैंडम सैंपल के शुरुआती परीक्षणों में सभी निगेटिव पाए गए हैं। कम्युनिटी ट्रांसमिशन के सबूत नहीं मिले हैं। यह रिपोर्ट सही नहीं है कि सरकार पर्याप्त लोगों का परीक्षण नहीं कर रही है। हमारा मकसद डर और भय के माहौल को कम करना है।

**प्र: जांच का तरीका क्या है, क्या भारत में पर्याप्त संसाधन है, कोरोना रोकथाम का भविष्य की रणनीति क्या हो सकती है?**



उः टेस्टिंग में कोई भेदभाव नहीं करना चाहते हैं। साथ ही अपने पास उपलब्ध संसाधनों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करना चाहते हैं। आईसीएमआर के चीफ एपिडेमियोलॉजिस्ट डॉ. आरआर गंगाखेड़कर की अगुवाई में भारत की टेस्टिंग स्ट्रैटेजी अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के तहत तैयार की गई है। दरअसल, उन देशों में यह महामारी स्टेज 3 में पहुंच गई है। ऐसे कोई सबूत मिलेंगे तो हम अपनी रणनीति में बदलाव करेंगे। हम स्थितियों पर पूरी नजर रख रहे हैं। आईसीएमआर की 51 लेबोरेटरी ने अलगअलग लोगों के सैंपल टेस्ट किए हैं। इसमें उन्हीं लोगों को शामिल किया गया जिन्हें सांस लेने में काफी ज्यादा तकलीफ थी। टेस्टिंग की सुविधाएं बढ़ाई गईं। आईसीएमआर में एपिडेमियोलॉजिस्ट डॉ. निवेदिता गुप्ता की निगरानी में कुल लिए गए 500 सैंपल में सभी निगेटिव पाए गए। नोवल कोरोना वायरस जांच के लिए अब 121 लैब चालू हैं। सरकारी विभागों और अस्पतालों की अन्य लैब को जल्दी ही इसकी जांच के लिए तैयार किया जाएगा। कोविड-19 की जांच के लिए निजी लेबोरेटरी के साथ गठजोड़ किया जा रहा है। नेशनल एक्रेडिएशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लेबोरेटरीज (एनएबीएल) से मान्यता प्राप्त लैबों को कोरोना वायरस की जांच के लिए अनुमति दी जाएगी। इनसे कहा जाएगा कि ये सेवाएं मुफ्त दी जाएं।

■ प्रस्तुति : ज्ञानप्रकाश

# कोरोना नमस्ते!

## सावधानी बरतें, अफवाहों पर न दें ध्यान



■ डॉ. के.के. अग्रवाल
अध्यक्ष, हार्ट केयर फाउंडेशन, एडिटर इन चीफ, मेडऑक्स

**कोरोना वायरस ने भारत समेत विश्व के लगभग 160 देशों को प्रभावित किया है। सरकार द्वारा इस वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं परंतु सोशल मीडिया और दूसरे स्तरों द्वारा कुछ भ्रांतियां, मिथ या अफवाहें भी फैलाई जा रही हैं। इस कारण लोगों में आतंक का माहौल बन रहा है। ऐसी परिस्थिति में लोगों को आतंकित होने के बजाय जागरूक होने की आवश्यकता है, जिससे भारत कोरोना के खिलाफ अपनी जंग जीत सके। नीचे ऐसे कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनको लेकर लोगों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है :**

**हमें छींके और खांसी आ रही है, क्या हमें कोरोना संक्रमण हो गया है?**

कोरोना वायरस के प्रति जागरूक होना चाहिए लेकिन पैनिक होना ठीक नहीं है। लोगों को इस बात का ख्याल होना चाहिए कि जब मौसम बदलता है तो फ्लू की संभावना भी बढ़ती है और फ्लू में सर्दी, खांसी होना आम बात है लेकिन इसे कोरोना वायरस समझने की गलती न करें। कोरोना वायरस के लक्षणों के बारे में पूरी और सही जानकारी जुटाएं, बहुत डॉक्टर हैं, जो लगातार कोरोना वायरस के लक्षण और बचाव के तरीके बताकर लोगों को जागरूक कर रहे हैं। सोशल मीडिया में कोरोना वायरस को लेकर बहुत सारी गलत और भ्रमित करने वाली खबरें चलाई जा रही हैं। लोगों को इन पर ध्यान नहीं देना है, आप केवल किसी सेर्टिफाइड डॉक्टर की सलाह मानें।

**क्या मच्छर के काटने से भी कोरोना संक्रमण हो रहा है?**

बिल्कुल गलत, कोरोना का संक्रमण किसी भी प्रकार से किसी भी मच्छर द्वारा नहीं हो सकता। ऐसा होता तो केसों में भारी वृद्धि देखी जाती।

**कोरोना संदिग्ध के साथ अस्पताल में बर्बर या बुरा व्यवहार किया जाता है?**

ऐसा बिल्कुल नहीं है, कोरोना वायरस संदिग्ध व्यक्ति को विशेष सुविधा के साथ रखा जाता है। इसके अलावा, उसके आसपास स्वच्छता शत प्रतिशत सुनिश्चित की जाती है। भोजन में विशेष सावधानी बरती जाती है, ताजा और स्वच्छ भोजन परोसा जाता है। डॉक्टर्स की टीम लगातार उनकी देखरेख में जुटी रहती है।

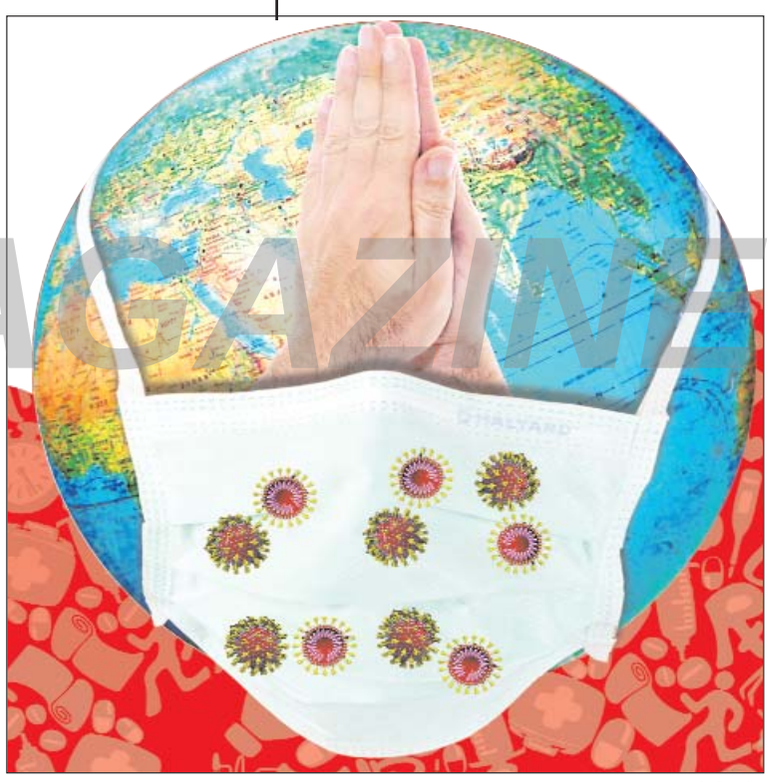
**क्या बाहर खाने से मैं कोरोना संक्रमित हो जाऊंगा?**

नहीं, लेकिन सावधानी जरूरी है क्योंकि कोरोना व्यक्ति से व्यक्ति में फैलने वाला संक्रमण है, इसलिए कोशिश करें कि घर पर बना भोजन ही करें। अभी तक बाहर खाने से कोरोना संक्रमित होने की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

### क्या है बचाव

**कोरोना वायरस से बचाव के लिए कुछ सावधानियां हैं, जिनका आपको पालन करना है-**

- जब भी बाहर से आएं तो हाथों को साबुन या हैंडवॉश से अच्छी तरह धोएं।
- लोगों से हाथ मिलाने और गले लगने से बचें और सबका अभिवादन हाथ जोड़कर करें।
- जब भी किसी व्यक्ति या स्थान को छुएं तो फौरन बाद हाथों को सैनिटाइजर से साफ करें।
- जिस व्यक्ति को छींकें या खांसी आ रही हो उससे निश्चित दूरी बनाए रखें।
- अगर आपको छींक या खांसी लगातार आ रही है तो मास्क पहनना आपके लिए अनिवार्य है।
- अगर आसपास कहीं किसी को छींकते या खांसते हुए पाएं तो उसे रूमाल, मास्क लगाने की सलाह दें।
- कोरोना संक्रमण से बचने के लिए सबसे बड़ा हथियार सावधानी ही है, इसलिए ऊपर बताई गई सावधानियों का पालन करें और मन में किसी प्रकार का कोई भ्रम न पालें। ■



इलस्ट्रेशन - जे.पी. त्रिपाठी

# बचाव ही है उपाय

**किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू), लखनऊ के पल्मोनरी एंड क्रिटकिल केयर मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.वेद प्रकाश से विकास शुक्ल और की बातचीत बातचीत**

**प्रश्न : कोविड-19 का संक्रमण लोगों में कैसे होता है और बचाव के लिए क्या करें ?**

जवाब : कोविड 19 बीमारी के वायरस का फैलाव रेस्परेटरी सीक्रेशन के द्वारा होता है। संक्रमित व्यक्ति जब झींक अथवा खांसी से वायरस का प्रसार कर देता है। बीमार व्यक्ति द्वारा छुए गए स्थान से भी वायरस स्वस्थ व्यक्ति के भीतर प्रवेश कर जाता है। बीमारी के उपचार में बचाव ही सबसे बड़ा उपाय है। आम लोग बचाव के लिए हाथ को एक मिनट तक साबुन अथवा तीस सेकेण्ड के लिए सेनेटाइजर का उपयोग कर साफ करें। बचाव के लिए सोशल गेदरिंग से बचना भी विकल्प है। खांसने व झींकने से बीमारी फैलती है। ऐसे में बांह की ओर मुंह करके ही झींकना चाहिए। उन्होंने कहा कि छह फुट की दूरी रखना भी आवश्यक है। इससे बीमारी का फैलाव थमेगा। उन्होंने कहा कि मास्क के उपयोग को लेकर भी बड़ी भ्रांति है। उन्होंने कहा कि मरीज, तीमारदार व उपचार कर रहे चिकित्सकों को एन-95 मास्क उपयोग करना आवश्यक है। चिकित्सक व नर्स को पीपीई किट पहनना चाहिए। मरीज को अस्पताल लाने वाले एम्बुलेंस चालक आदि को ट्रिपल लेयर मास्क से सुरक्षित किया जा सकता है।

**प्रश्न : कोविड 19 बीमारी के लक्षण क्या हैं ?**

जवाब : स्वस्थ व्यक्ति में संक्रमण होने से 2 से 14 दिन के भीतर वायरस अपना असर दिखाता है। वायरस श्वसन तंत्र पर हमला बोलता है। पहले चरण में अपर रेस्परेटरी ट्रैक प्रभावित होता है। नाक से वोकल कार्ड तक बीमारी अपना असर दिखाती है। अगले चरण में लोअर रेस्परेटरी ट्रैक पर असर पड़ता है। सर्दी, बुखार, सूखा कफ, थकान, सांस फूलने के साथ ही गम्भीर स्थिति में मरीज बेहोश हो जाता है।



**प्रश्न : कोरोना वायरस की बीमारी फैलती कैसे है ?**

जवाब : कोविड-19 चार चरणों में फैलती है। पहले चरण में यात्रा करके दूसरे देशों से आए लोगों से बीमारी फैली। दूसरे चरण में लोकल ट्रांसमिशन हुआ है। केन्द्र व राज्य सरकार ने लोकल ट्रांसमिशन रोकने के लिए काफी एहतियाती कदम उठाए हैं। आम लोगों को भी इसमें जागरूक होकर सहयोग करना होगा। अगले चरण में बीमारी कम्युनिटी ट्रांसमिशन की ओर बढ़ती है। चौथे चरण में यह महामारी का रूप ले लेती है। बीमारी की रोकथाम के लिए कोरानटाइन व आईशोलेशन बेहतर उपाय हैं। यूरोप व चीन में इसको अपना कर बीमारी के फैलाव को थामा गया है।

**प्रश्न : कोविड 19 पर नियंत्रण के लिए और क्या कदम उठाने होंगे ?**

जवाब : कोविड 19 बीमारी का फैलाव होने पर कई चरणों में काम करना होगा। पहले चरण में प्रदेश व देश में और अधिक प्रयोगशालाओं में जांच की सुविधा उपलब्ध करानी होगी। अभी सरकार ने कई संस्थानों में जांच की सुविधा प्रदान की है। उन्होंने कहा कि उपचार व बचाव में उपयोग की जाने वाले सामग्री का बफर स्टॉक रखना होगा। बीमारी से प्रभावित इलाकों को क्लस्टर बनने से रोकना होगा। वायरस से संक्रमण की पुष्टि होने पर मरीज को बेहतर चिकित्सा सुविधा दी जानी चाहिए।

**प्रश्न : कोविड 19 को लेकर नियंत्रण कक्ष की क्या तैयारी होनी चाहिए?**

जवाब : कोविड 19 बीमारी के फैलाव की सटीक जानकारी नियंत्रण कक्ष में दर्ज होनी चाहिए। राज्य व जिला स्तर पर नियंत्रण कक्ष के साथ ही उपचार कर रहे संस्थानों में भी नियंत्रण कक्ष आवश्यक है। किसी भी प्रभावित इलाके में भी नियंत्रण कक्ष स्थापित होना चाहिए ताकि सभी सरकारी एजेंसी एकजुट होकर काम कर सकें और किसी भी प्रकार की अफवाह का मुकाबला कर सकें। ■

## कोरोना
### भारत में मामालों की रफ्तार



| | |
|---|---|
| जनवरी ३० | १ |
| फरवरी २ | २ |
| फरवरी ३ | ३ |
| मार्च २ | ६ |
| मार्च ४ | २९ |
| मार्च ५ | ३० |
| मार्च ६ | ३१ |
| मार्च ७ | ३४ |
| मार्च ८ | ३९ |
| मार्च ९ | ४३ |
| मार्च १० | ५० |
| मार्च ११ | ६० |
| मार्च १२ | ७७ |
| मार्च १६ | १४४ |
| मार्च १९ | १७३ |

# विदेशों के डॉक्टर भी हमसे संपर्क कर रहे हैं

**जयपुर के एसएमएस अस्पताल की टीम के डॉ. विष्णु गुप्ता, डॉ.परमानंद, डॉ.पीएस पीपलीवाल, डॉ. निकिता शर्मा, डॉ. महेन्द्र, डॉ. पुष्पेन्द्र, डॉ. अजीत सिंह, डॉ. हरीश जाखड़, डॉ. उमाशंकर कुमावत और डॉ. दिलीप राज के अलावा नर्सिंग स्टाफ संदीप मीणा तथा अरमान चितोसिया और नर्सिंग स्टूडेंट्स के सहयोग से ही कोरोना के पॉजिटिव मरीजों का इलाज कर उन्हें नगेटिव लाने में सफलता मिली है। एसएमएम के डॉक्टरों द्वारा ईजाद दवाओं का फार्मूला कामयाब रहता है तो निश्चित ही दुनिया के सामने नायाब सस्ता और टिकाऊ के साथ सफल इलाज बन सकेगा। कोरोना महामारी के इलाज के बारे में एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य *डॉ. सुधीर भंडारी से श्याम सुंदर शर्मा* की बातचीतः-**

**कोरोना महामारी के इलाज के बारे में एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुधीर भंडारी से श्याम सुंदर शर्मा की बातचीतः-**

**प्रश्नः आपके अस्पताल के डॉक्टरों की टीम ने किस दवा से कोरोना मरीज का इलाज किया जिससे फायदा हुआ?**

**उत्तर :** कोरोना महिला मरीज को लोपिनाविर 200 एमजी/रिटोनाविर 50 एमजी का डोज दिन में दो बार दिया गया। इस कॉम्बिनेशन से आईसीएमआर (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिर्सच) भी संतुष्ट था। इसके अलावा, पॉजिटिव मरीजों को स्वाइन फ्लू में दी जाने वाली ओस्लेटामिविर और मलेरिया में इस्तेमाल होने वाली दवा क्लोरीकीन दी। इन दवाओं के कॉम्बिनेशन का ही परिणाम रहा कि एक पॉजिटिव महिला की रिपोर्ट निगेटिव आई।

**प्रश्न : कोरोना महामारी से पीड़ित का इलाज कैसे शुरू किया?**

उत्तर : सही है कि कोरोना पीड़ित मरीज का इलाज चुनौती का काम था। लेकिन पता था कि मौजूदा सीजन कोरोना का है और जब एसएमएस अस्पताल में पहला मरीज पहुंचा तो डॉक्टरों की टीम ने पीड़ित मरीज का तीन तरीके से इलाज शुरू किया। पहला- सपोर्टिंग ट्रीमेंट, दूसरा-मेडिकल ट्रीमेंट; और तीसरा-रिसर्च का काम। इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए और विश्वास हुआ है कि कोरोना का स्थायी इलाज संभव हो सकता है और इसके लिए निश्चित ही रिसर्च और क्लिनिक ट्राई की जरूरत है।



**प्रश्न : कोरोना के बारे में आपकी कोई पहले भी जानकारी रही है?**

उत्तर : भारत में सार्स और मर्स एपेटेमिक वायरस पहले से प्रचलित है। यह वायरस भी कोरोना से मिलता-जुलता है। इसका इलाज भी एंटी वायरस दवाओं के माध्यम से किया जाता रहा है।

**प्रश्न : आपने इलाज की प्रामाणिकता को लेकर किससे सलाह ली थी?**

उत्तर : हां, एंटी वायरस उपयोग से पहले आईसीएमआर को सूचित कर सलाह ली गई। आईसीएमआर ने कोरोना मरीज के इलाज में पूरा सहयोग दिया। पीड़ित मरीज को पांच दिन तक एंटी मलेरिया दवाइयां दी गईं। दवाइयों के साइड इफेक्ट पर विशेष ध्यान दिया गया। अस्पताल में अब तक चार मरीज आए और उन्हें एंटी वायरस की दवाइयां देकर तीन मरीजों को पॉजिटिव से नगेटिव लाने में ऐतिहासिक सफलता एसएमएस अस्पताल के डॉक्टरों की टीम ने हासिल की। कोरोना के चार मरीजों में से तीन ठीक हो चुके हैं। दो को छूट्टी दी जा चुकी है।

**प्रश्न : एसएमएस अस्पताल के अनुभव का लाभ दूसरों को कैसे मिलेगा?**

उत्तर : गर्व की बात है कि रोजना कोरोना से पीड़ित देश इटली, अमेरिका, यूके, बांग्लादेश और नेपाल के डॉक्टर एसएमएस अस्पताल में कोरोना के इलाज की पद्धति की जानकारी के लिए संपर्क कर रहे हैं। इसके अलावा अमेरिका के डॉक्टर तो वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इलाज के बारे विस्तार से जानकारी कर अपने वहां कोरोना पीड़ितों का इलाज कर रहे हैं।

**प्रश्न : कोरोना महामारी से निपटने की भावी योजना क्या है?**

उत्तर : कोरोना महामारी के इलाज के लिए एक प्रोटोकॉल बनाया गया है। लेकिन अभी भी क्लीनिक ट्राइल की जरूरत है। एसएमएस मेडिकल कॉलेज में कोरोना को लेकर फिलहाल रिसर्च चल रहा है जिससे कि भविष्य में कोरोना जैसी महामारी का इलाज हर संभव हो सके। इसके लिए राज्य सरकार का भरपूर सहयोग मिल रहा है। उसी का परिणाम है कि चार मरीजों में से तीन का सफलतापूर्वक इलाज कर पाए हैं।

**प्रश्न : कोरोना को रोकने के लिए लोगों को क्या संदेश देना चाहेंगे?**

उत्तर : कोरोना को लेकर डरने या घबराने की जरूरत नहीं है। इससे बचाव के लिए सजग रहने के साथ समय पर अस्पताल पहुंच कर इलाज कराने की जरूरत है। ■

## कितनी है भारत की तैयारी



- जांच-सरकारी लैब 72, निजी 51 लैब को मंजूरी
- 1 लैब में 6 घंटे में 90 सैंपल जांचे जा सकते हैं, इसे दो गुना किया जा सकता है
- 5-30 बिस्तर सभी सरकारी अस्पतालों में कोरोना के मरीजों के लिए आरक्षित
- दिल्ली और ओडिशा में बड़ी मशीनें लगाने की तैयारी, प्रति दिन 1400 सैंपल जांचे जाएंगे
- चेस्ट मेडिसिन और एनेस्थीसिया के डॉक्टरों की कमी
- चेस्ट मेडिसिन के सिर्फ 1500 डॉक्टर उपलब्ध, 23 हजार की जरूरत
- एनेस्थीसिया के 22 हजार डॉक्टर उपलब्ध, 1.5 लाख की जरूरत
- अपर्याप्त हैं आईसीयू और वेंटीलेटर
- सरकारी अस्पतालों में आईसीयू बेड की संख्या 70 हजार है, वहीं 2 लाख बेड की

## प्रति दस लाख लोगों पर टेस्ट



| | |
|---|---|
| बहरीन | 6,165 |
| द.कोरिया | 4,881 |
| चीन | 2,820 |
| आइसलैंड | 2,508 |
| नॉर्वे | 1,515 |
| इटली | 1,421 |
| रूस | 533 |
| यूके | 451 |
| मलयेशिया | 127 |
| फ्रांस | 99 |

आंकड़े 16 मार्च तक